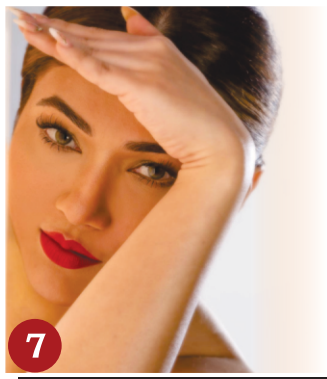

7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर से रवि किशन की चौतरफा जीत

5 चुनावी बिसात में नौकरशाह चारों खाने चित
चुनाव में उतरे सभी छह अफसरों की हुई हार

8 अर्धशतक लगाकर रिटायर्ड हर्ट हुए रोहित

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 46 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 10 जून, 2024

मोदी 3.0 मंत्रिपरिषद के सदस्य

कैबिनेट मंत्री

राजनाथ सिंह
उम्र:72 | संपत्ति:05 करोड़

अमित शाह
उम्र:59 | संपत्ति:65 करोड़

नितिन गडकरी
उम्र:67 | संपत्ति:28 करोड़

जेपी नड्डा
उम्र:63 | संपत्ति:9.36 करोड़

शिवराज चौहान
उम्र:65 | संपत्ति:08 करोड़

निर्मला सीतारमण
उम्र:64 | संपत्ति:02 करोड़

डॉ. एस जयशंकर
उम्र:68 | संपत्ति:20 करोड़

मनोहर लाल
उम्र:70 | संपत्ति:02 करोड़

एचडी कुमारस्वामी
उम्र:65 | संपत्ति:217 करोड़

पीयूष गोयल
उम्र:59 | संपत्ति:110 करोड़

तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ

नरेंद्र मोदी
उम्र: 73
कहां से जीते
वाराणसी

संपत्ति
3.02 करोड़
शिक्षा
स्नातकोत्तर
पेशा
सामाजिक जीवन, राजनेता

1962 के बाद लगातार तीसरी बार चुनाव जीतकर प्रधानमंत्री बनने वाले पहले नेता।
सबसे लंबे समय तक सरकार चलाने वाले पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री।

नई दिल्ली । नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली है। उनके बाद राजनाथ सिंह, अमित शाह से लेकर जयशंकर और निर्मला सीतारमण ने भी एक बार फिर मंत्री पद की शपथ ली। इसके अलावा जेडीएस के कुमारस्वामी, हम के जीतनराम मांझी ने भी शपथ ली।

मोदी सरकार 3.0 ने शपथ ले ली है। राष्ट्रपति भवन में आयोजित भव्य समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कुल 72 मंत्रियों ने पद और गोपनीयता की शपथ ली। शपथ ग्रहण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी के बाद दूसरे नंबर पर राजनाथ सिंह ने शपथ ली। अमित शाह, गडकरी और शिवराज सिंह चौहान समेत कुल 30 कैबिनेट मंत्रियों ने शपथ ली। आइए देखते हैं कैसी है मोदी कैबिनेट 3.0 की तस्वीर।

मोदी 3.0 मंत्रिपरिषद के सदस्य

कैबिनेट मंत्री

धर्मेंद्र प्रधान
उम्र:54 | संपत्ति:06 करोड़

जीतन राम मांझी
उम्र:78 | संपत्ति:30 लाख

राजीव रंजन सिंह
उम्र:70 | संपत्ति:13.82 करोड़

सर्बानंद सोनोवाल
उम्र:62 | संपत्ति:04 करोड़

वीरेंद्र कुमार
उम्र:70 | संपत्ति:02 करोड़

के राममोहन नायडू
उम्र:36 | संपत्ति:23 करोड़

प्रह्लाद जोशी
उम्र:61 | संपत्ति:21 करोड़

जुएल ओराम
उम्र:63 | संपत्ति: 8.63 करोड़

गिरिराज सिंह
उम्र:71 / संपत्ति:14 करोड़

अश्विनी वैष्णव
उम्र:53 | संपत्ति:144 करोड़

प्रधानमंत्री मोदी की नई टीम के सदस्य

राजनाथ सिंह
कैबिनेट मंत्री
उम्र: 72
कहां से जीते
लखनऊ

संपत्ति
7.36 करोड़
शिक्षा
स्नातकोत्तर
पेशा
किसान, राजनीति

क्यों बने: 2014 की पहली मोदी सरकार में गृह और 2019 में बनी मोदी सरकार में रक्षा मंत्री के तौर पर जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की नई टीम के सदस्य

अमित शाह
कैबिनेट मंत्री
उम्र: 59
कहां से जीते
गांधीनगर

संपत्ति
65.67 करोड़
शिक्षा
12वीं पास
पेशा
किसान, समाजसेवी

क्यों बने: प्रधानमंत्री मोदी के सबसे भरोसेमंद साथी, भाजपा के सबसे बड़े रणनीतिकार, पिछली सरकार में कई अहम फैसलों का चेहरा रहे।

अखिलेश यादव बोले:जनता ने लोकतंत्र और संविधान बचाने का काम किया, संत रामदास ने ओढ़ाया रामनामी दुपट्टा

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी का संदेश हम सबसे नई उम्मीदों और नई अपेक्षाओं का जनादेश है। इस जनादेश को हम एक नए दायित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। इंडिया गठबंधन के सभी सांसद अपने कर्तव्य को बखूबी निभाएंगे। जनता हमारी प्राथमिकता है और सदैव रहेगी। लोकसभा चुनाव में सपा के 37 सीटें जीतकर तीसरी बड़ी ताकत बनने पर शुक्रवार को अखिलेश यादव का प्रदेश पार्टी मुख्यालय पर जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने अयोध्या से सपा की जीत का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि इस लोकसभा चुनाव में विचारधारा और संविधान की जीत हुई है। जनता ने संविधान और लोकतंत्र को बचाने का काम किया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव, राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, लौटन राम निषाद मौजूद रहे।

अखिलेश यादव ने सभी निर्वाचित सांसदों को बधाई देते हुए कहा कि हर शोषित, पीड़ित और वंचित की सेवा ही हम सबका पहला कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि हम मानते हैं कि हमारे जो भी प्रत्याशी भाजपाई–प्रशासनिक घपलों की वजह से जीत दर्ज नहीं कर पाए, दरअसल वो सब भी जीते हुए ही हैं। भाजपा को जो भी वोट मिला है, उसका आधार जनता के वोट नहीं, बल्कि उनका प्रशासनिक तंत्र और उनकी घपलेबाजी है। उन्होंने कहा कि लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में जनता ने इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों को भरपूर समर्थन दिया है। इसलिए ऐसे सभी जुझारू प्रत्याशियों को हम जनता के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में किसी भी अन्य सांसद के बराबर मानते हुए 'सम्मांसद' की जन–उपाधि से सुशोभित मानते हैं। आनेवाला समय उनका ही होगा।

नए अवतार में अखिलेश गले में रामनामी, हाथ में रामलला की प्रतिमा

अखिलेश यादव नए अवतार में। –

संत रामदास ने ओढ़ाया रामनामी दुपट्टा

प्रदेश सपा मुख्यालय पर अयोध्या से आए बालयोगी संत रामदास ने अखिलेश यादव को रामनामी दुपट्टा पहनाया। इनके अलावा कर्नाटक समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एन. मंजप्पा, केरल समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष साजी थॉमस पोथन, केरल जनता दल (सेक्यूलर) के राष्ट्रीय सचिव आरएस प्रभात ने भी उनका अंगवस्त्र पहनाकर तथा पुष्पगुच्छ देकर अभिवादन किया।

नवनिर्वाचित सांसदों की बैठक आज

सपा के नवनिर्वाचित सांसदों की बैठक प्रदेश पार्टी कार्यालय पर शनिवार को होगी। इसमें अखिलेश यादव सांसदों को आगे की रणनीति समझाएंगे। सपा की योजना लोकसभा में विभिन्न मुद्दों को आक्रामकता से उठाने की है।

यूपी में लौटी कांग्रेस

कहीं 40 साल बाद जीत तो कहीं रिकॉर्ड बढ़ा मत प्रतिशत

गोरखपुर। यूपी में कहीं दोबारा तो कहीं 40 साल बाद कांग्रेस ने परचम लहराया है। हारने वाली सीटों पर भी 40 फीसदी तक वोटबैंक बढ़ा है। कांग्रेस–सपा की एकजुटता का फायदा मिला है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस छह सीटों पर जीत गई है, जबकि 11 पर दूसरे स्थान पर है। पार्टी ने रायबरेली में अपना दबदबा बरकरार रखा तो अमेठी में पांच साल बाद हिसाब बराबर कर लिया। वहीं प्रयागराज, सहारनपुर में 40 साल बाद परचम लहराने में कामयाब रही। जिन सीटों पर कांग्रेस दूसरे स्थान पर रही वहां 2019 की अपेक्षा 40 फीसदी वोटबैंक बढ़ा है। इसकी बड़ी वजह यह है कि कांग्रेस और सपा की एकजुटता मंच से लेकर बूथ तक कायम रही। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस वर्ष 2014 में 7.53 फीसदी और 2019 में 6.36 फीसदी वोट हासिल कर पाई थी, लेकिन वर्ष 2024 में वह 9.46 फीसदी पर पहुंच गई है। पेश है सीटों का विवरण बयां करती रिपोर्ट :

रायबरेली– यहां गांधी परिवार का दबदबा कायम है। सोनिया गांधी के बाद उनके बेटे राहुल गांधी विजयी रहे। यहां वर्ष 2019 में सोनिया गांधी को 55.80 फीसदी वोट मिले थे, जबकि 2024 में राहुल गांधी को 66.17 फीसदी वोट मिले। भाजपा 38.36 से घटकर 28.64 फीसदी पर आ गई।

अमेठी– यह सीट भी इस चुनाव में कांग्रेस के किशोरी लाल शर्मा ने स्मृति ईरानी से जीत ली। कांग्रेस को वर्ष 2019 की अपेक्षा 11.03 फीसदी की बढ़त के साथ 54.99 फीसदी वोट मिले, जबकि स्मृति ईरानी को 11.70 फीसदी की गिरावट के साथ 37.94 फीसदी वोट मिले।

सीतापुर– यहां 35 साल बाद कांग्रेस काबिज हुई है। कभी भाजपा के विधायक रहे राकेश राठौर इस बार कांग्रेस के टिकट पर मैदान में उतरे और विजयी रहे। यहां कांग्रेस को वर्ष 2019 की अपेक्षा 39.18 फीसदी की बढ़त मिली है, जबकि भाजपा के वोटबैंक में 8.27 फीसदी की गिरावट हुई है।

बाराबंकी– यहां से वर्ष 2009 में पीएल पुनिया सांसद चुने गए। इस बार उनके बेटे तनुज पुनिया विजयी रहे। वे वर्ष 2019 की अपेक्षा 41.96 फीसदी वोटबैंक बढ़ाकर 55.78 फीसदी वोट हासिल किए। जबकि भाजपा की राजरानी रावत 7.32 फीसदी की गिरावट के साथ 39.07 फीसदी वोट हासिल कर पाईं।

प्रयागराज– यहां वर्ष 1984 में कांग्रेस के टिकट पर अमिताभ बच्चन चुने गए थे। करीब 40 साल बाद सपा से कांग्रेस में आए उज्जवल रणन सिंह ने कांग्रेस का परचम लहराया है। उन्होंने 2019 की अपेक्षा 45 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 48.80 फीसदी वोटबैंक हासिल किया।

सहारनपुर– यहां भी 40 साल बाद इमरान मसूद ने कांग्रेस का परचम लहराया है। वे 2019 की अपेक्षा 27.76 फीसदी बढ़त के साथ 44.57 फीसदी वोटबैंक हासिल किए, जबकि भाजपा 0.59 फीसदी की गिरावट के साथ 39.33 फीसदी वोटबैंक हासिल कर पाई।

यहां वोट प्रतिशत बढ़ाने में मिली सफलता

वाराणसी – वर्ष 2009 में कांग्रेस से सांसद बने राजेशपति मिश्रा अब भाजपा में हैं। कांग्रेस के अजय राय 26.36 फीसदी की बढ़त के साथ 40.74 फीसदी वोटबैंक हासिल किए। जबकि भाजपा 9.38 फीसदी की गिरावट के साथ 54.24 फीसदी पर रही।

झांसी– यहां 2009 में प्रदीप जैन ने परचम लहराया। उसके बाद कांग्रेस को सफलता नहीं मिली। 2019 की अपेक्षा 36.33 फीसदी की बढ़त के साथ कांग्रेस को 42.57 फीसदी वोट मिला, जबकि भाजपा को 8.61 फीसदी की गिरावट के साथ 50 फीसदी वोट मिला।

बांसगांव– यहां 2004 के बाद कांग्रेस को सफलता नहीं मिला है। 2019 की अपेक्षा कांग्रेस के सदल प्रसाद 5.53 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 45.04 फीसदी वोट हासिल किए। भाजपा 11.03 फीसदी की गिरावट के साथ 45.38 फीसदी वोट हासिल कर सकी।

देवरिया– यहां करीब 40 साल से कांग्रेस को सफलता नहीं मिली है। 2019 की अपेक्षा कांग्रेस के अखिलेश सिंह को 40 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 45.02 फीसदी वोट मिले, जबकि भाजपा को 8.81 फीसदी की गिरावट के साथ 48.38 फीसदी वोट मिला।

सम्पादकीय

लौट रहा है गठबन्धन सरकारों का दौर

10 वर्षों तक भारतीय जनता पार्टी और नरेन्द्र मोदी का एकछत्र शासन, खासकर 2019 से 2024 तक देखने के बाद लगता है कि देश में फिर से गठबन्धन सरकारों के दिन लौट रहे हैं

10 वर्षों तक भारतीय जनता पार्टी और नरेन्द्र मोदी का एकछत्र शासन, खासकर 2019 से 2024 तक देखने के बाद लगता है कि देश में फिर से गठबन्धन सरकारों के दिन लौट रहे हैं। मोदी के शासन करने के तरीके ने यह सबक देशवासियों को दिया है कि गठबन्धनों से परहेज करना ठीक नहीं है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिये यह व्यवस्था, वह भी वर्तमान परिस्थितियों में सम्भवतः एक दल के पूर्ण बहुमत वाली सरकार से बेहतर हो सकती है। 18वीं लोकसभा के लिये हुए चुनावों के जो परिणाम आये हैं, उसके बाद यह तो साफ है कि अगली सरकार जो भी बनेगी वह गठबन्धन की होगी। ऐसी सरकारों के बारे में कायम पूर्वाग्रहों और कुछ पैमाने में उनका भारत में जो भी इतिहास रहा हो, अगर वह सब दरकिनार कर दिया जाये तो देशवासियों के हित में यह बुरा सौदा नहीं हो सकता। 2014 में मोदी की अगुवाई में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दो कार्यकाल पूरे कर चुकी जिस यूपीए सरकार को हटाया गया था, वह भी एक गठजोड़ ही था। ऐसा गठजोड़ जिसने अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व में चल रही नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस की सरकार को हटाया था। एकछत्र राज करने की चाहत में मोदी ने जहां एक ओर अपने विपक्षी दलों को साफ करने की कोशिश की, तो वहीं अपने सहयोगी दलों को भी समाप्त कर दिया। कुछ दलों को तो तोड़ ही दिया। भाजपा की अति महत्वाकांक्षा और मोदी की एकाधिकार की प्रवृत्ति ने एक सामंजस्यपूर्ण कार्य प्रणाली को ध्वस्त कर दिया। पहली बार (2014–19) तो उन्होंने सहयोगी दलों के सदस्यों का थोड़ा बहुत सम्मान किया और उन्हें सत्ता में भागीदारी दी परन्तु दूसरे कार्यकाल में जब उन्हें अपने दम पर पूर्ण बहुमत मिल गया तो उन्होंने उन दलों को न केवल दरकिनार किया वरन उनकी जमीनें हथियाने की भी कोशिश की। महाराष्ट्र में शिवसेना को दो–फाड़ किया और उसकी सरकार गिरा दी। पंजाब में शिरोमणि अकाली दल से उनकी पटरी नहीं बैठी।

1977 में पहली बार भारत ने जनता पार्टी की गठबन्धन सरकार देखी थी। मोरारजी देसाई उसके प्रधानमंत्री बने थे। यह सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई। मध्यावधि चुनाव हुए और 1980 में इंदिरा गांधी सत्ता में लौटीं। इसके पहले कुछ समय के लिये कांग्रेस के समर्थन से चौधरी चरण सिंह की सरकार भी बनी लेकिन वह लम्बा चलने में असफल रही थी। इसके कारण गठबन्धन सरकारों को लेकर लोगों के मन में आशंका बैठ गयी। मान लिया गया कि ऐसी सरकारें टिकाऊ नहीं होतीं।

हालांकि इसकी दूसरी वजहें थीं, पर विरोधी दलों के लिये यह जुमला चल पड़ा कि 'डिवाइडेड दे स्टैंड, यूनाइटेड दे फॉल (विभाजित रहते वे मजबूत होते हैं, इकठ्ठे धराशायी)। 1989 में एक और अवसर आया जब 400 पार वाली परन्तु बोफोर्स के कारण बदनाम हुई राजीव गांधी की मजबूत सरकार को उसी में वित्त मंत्री व रक्षा मंत्री रहे वीपी सिंह के नवगठित जनता दल ने परास्त किया था। हालांकि उस चुनाव में सर्वाधिक सीटें कांग्रेस को ही आई थीं लेकिन 1984 के मुकाबले काफी कम थीं। इसे राजीव ने अपनी नैतिक पराजय माना था और सरकार बनाने से इंकार कर दिया था। वी पी सिंह आगे बढ़े थे। उन्हें भाजपा के साथ कुछ प्रगतिशील दलों ने समर्थन दिया था। मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के चलते भाजपा द्वारा समर्थन खींच लेने से यह सरकार भी गिर गयी तथा कुछ समय के लिये चंद्रशेखर पीएम बने। वह कांग्रेस के समर्थन से चले पर राजीव के बंगले की हरियाणा पुलिस के दो कांस्टेबलों द्वारा जासूसी कराये जाने के आरोप में कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया था। इंद्रकुमार गुजराल एवं एच डी देवेगौड़ा जैसों द्वारा भी गठबन्धन सरकारें चलाने का इतिहास इसी देश का है।

पहली बार वाजपेयी सरकार ने 1999 से 2004 तक का कार्यकाल पूरा किया था जो कि मिली–जुली सरकार थी। हालांकि इसके पहले वे एक बार 13 दिन और दूसरी बार 13 माह की गठबन्धन सरकारें चला चुके थे। इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि सरकार उनकी दो बार गिरी लेकिन गठबन्धन अटूट रहा। सहयोगी दल साथ बने रहे। इसने यह लोकतांत्रिक प्रशिक्षण दिया कि पराजय में बिखरना नहीं है और मिलकर सरकार बनाने के प्रयास करते रहने हैं। वाजपेयी भी वैसे ही कट्टर हिन्दू और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उतने ही समर्पित कार्यकर्ता थे जितने कि नरेन्द्र मोदी। जब तक वे सरकार चलाते रहे उन्होंने अपनी विचारधारा को एक किनारे रख दिया था। उन्होंने अपने साथ जॉर्ज फर्नांडीज, नीतीश कुमार, शरद यादव जैसे समाजवादियों को भी रखा, पाकिस्तान की यात्रा की और जिस गोधरा कांड में बड़ी संख्या में मुस्लिम मारे गये व बलात्कार हुए थे, उसके होने पर इन्हीं मोदी को राजधर्म का पालन करने की सरेआम नसीहत भी दी, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे।

मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी यह मिथक टूटा कि गठबन्धन सरकारें काम नहीं करतीं। ग्रामीण गरीबी दूर करने के लिये मनरेगा, भोजन का अधिकार, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे नायाब कार्यक्रम इसी गठबन्धन सरकार की सौगातें हैं। सो, ऐसे वक्त में जब पूर्ण बहुमत के अभाव में कोई भी अपने दम पर सरकार नहीं बना सकता, साफ है कि सत्ता मिल–जुलकर ही चलाई जा सकती है। वैसे भी लोकतंत्र का मतलब है मिलकर काम करना। मोदी को सामंजस्यपूर्ण तरीके से काम करने की आदत नहीं। उन्हें गठबन्धन की संस्कृति सीखनी आवश्यक तो है, लेकिन वाजपेयी और मनमोहन सिंह सदृश्य लचीलेपन व उदारता के अभाव में उनके हाथों में पड़कर ऐसी सरकार वाकई में अस्थिर हो सकती है।

जनता का डंका बज गया

भाजपा के अलावा दूसरे दलों के भी उन तमाम अहंकारी नेताओं को जवाब मिल गया है, जिन्होंने खुद को जनतंत्र से ऊपर समझने की गलती की। अपनी कमजोरियों को सहजता से स्वीकार नहीं किया और न ही सही सलाह देने वालों को सुनने की समझदारी दिखाई। इंडिया गठबंधन में भी कई नेता ऐसे ही अतिआत्मविश्वास और घमंड का शिकार रहे। नरेन्द्र मोदी का हमेशा दावा रहा है कि दुनिया में उनका डंका बजता है। लेकिन 4 जून को जब 18वीं लोकसभा के नतीजे आए तो नरेन्द्र मोदी देश तक में अपने नाम का डंका नहीं बजवा पाए। जबकि भाजपा ने पूरा चुनाव मोदी नाम के इर्द–गिर्द ही लड़ा। वाराणसी में ले–देकर नरेन्द्र मोदी अपनी सीट बचा पाए। दो बार का प्रधानमंत्री होने के बावजूद वे आसान जीत नहीं दर्ज कर पाए, ना ही बड़े अंतर से सीट जीती।

महज डेढ़ लाख वोट का अंतर हार और जीत का रहा। उनसे अधिक वोट राहुल गांधी रायबरेली में ले आए, जबकि स्मृति ईरानी और नरेन्द्र मोदी राहुल गांधी को वायनाड और रायबरेली दोनों से भगाने का दावा करते रहे।

खैर, नरेन्द्र मोदी ने राहुल गांधी ही नहीं भारतीय जनता को समझने में भी भूल की। उन्हें लगा होगा कि वे एक तरफ निम्न स्तर के भाषणों से विपक्ष पर प्रहार करते रहेंगे और दूसरी तरफ विभिन्न वेषभूषाओं में पूजा–पाठ करते दिखेंगे तो जनता इससे प्रभावित होगी। यहीं वे चूक कर गए, क्योंकि इस देश की आम जनता के पास वो पैनी नजर है जिससे वो असलियत और दिखावे का फर्क कर लेती है। पांच किलो अनाज लेने के लिए लाइनों में खड़े 85 करोड़ लोगों की जेबें बेशक खाली रहीं, लेकिन सामान्य समझ भरी–पूरी रही। जिससे वे समझ गए कि उन्हें इस तरह लाइनों में खड़ा करने का जिम्मेदार कौन है।

क्यों उनके जवान बच्चे काम पर नहीं जाते, लेकिन धार्मिक जुलूसों या कांवड़ यात्रा का हिस्सा बनते हैं और बाकी खाली वक्त में बेरोजगारी की कुंठा और तनाव से गुजरते हैं। जो सरकार हजारों करोड़ का भव्य मंदिर बनवा सकती है, जो बिना जरूरत के सेंट्रल विस्टा का निर्माण करती है, वो रोजगार देने वाले उद्यमों को खड़ा क्यों नहीं करती। जय जवान और जय किसान वाले इस देश में जवानों और किसानों की दुर्दशा किन कारणों से हुई, ऐसे कई सवालों का जवाब जनता ने बीते वर्षों में खुद से तलाश कर लिया था। इसलिए इस बार उसने ऐसा जनादेश दिया कि फिर कोई नेता यह बड़बोलापन न कर सके कि एक अकेला सब पर भारी है। लोकतंत्र में एक अकेले के लिए न कभी कोई जगह थी, न रहेगी, ये बड़ा संदेश इन चुनावों में जनता ने दे दिया।

पाठकों को भाजपा का घोषणापत्र याद होगा ही, जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा से कहीं ज्यादा तस्वीरें नरेन्द्र मोदी की थीं और जनता से किए वादों को मोदी की गारंटी के नाम से ही पेश किया गया। चुनावों में सबसे अधिक प्रचार भी नरेन्द्र मोदी ने ही किया। कई महीनों से वे दिल्ली में अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में कम और चुनाव क्षेत्रों में ज्यादा नजर आए। 15 अगस्त 2023 को लालकिले की प्राचीर से उन्होंने ऐलान कर दिया था कि तीसरी बार भी मैं ही झंडा फहराने आऊंगा। यह सीधे–सीधे भारतीय जनता के विवेक और लोकतांत्रिक अधिकारों को चुनौती थी कि तुम्हारी मर्जी अब मायने नहीं रखती, केवल मेरे मन की बात का महत्व है। इसके बाद 5 फरवरी 2024 को संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने ऐलान कर दिया कि एनडीए को 4 सौ के ऊपर और अकेले भाजपा को 370 सीटें मिलेंगी। यह दावा देश के मिज़ाज भांपने के दम पर किया गया था।

चुनाव प्रक्रिया शुरु हुई नहीं थी कि नरेन्द्र मोदी ने यह बताना शुरु कर दिया कि कितने देश उन्हें अभी से जून के बाद होने वाले कार्यक्रमों के लिए बतौर प्रधानमंत्री न्यौता दे रहे हैं। अर्थात न केवल उन्हें बल्कि दुनिया को भी यकीन है कि आएगा तो मोदी ही। जी हां, यही नारा भाजपा में मोदी समर्थकों की जुबां पर हमेशा रहा है। ये नारा अपने आप में खासा अलोकतांत्रिक है। लेकिन जिनके सरोकारों में लोकतंत्र दूर–दूर तक न हो, उनसे क्या अपेक्षा की जा सकती है।

इस देश को लोकतंत्र और संविधान बचाने की सारी अपेक्षाएं विपक्ष से ही थीं। क्योंकि देश ने यह मंजर भी देख लिया कि कैसे एक के बाद एक करते–करते सौ से अधिक सांसदों को संसद से निलंबित कर दिया गया। किस तरह संसद के नए भवन के भीतर धुआं फैलाने की घटना हो गई। जिसे हमला ही कहा जाना चाहिए, क्योंकि इसमें जान–माल की हानि तो नहीं हुई, लेकिन संसद की मर्यादा पर वार तो किया ही गया था।

विपक्ष इस मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगता रह गया, मगर जैसे पुराने सारे सवाल संसद की दीवारों से टकराकर लौट गए, वैसा ही इस मुद्दे पर भी हुआ। देश देख रहा था कि पिछले दस सालों में संसद लोकतंत्र का मंच नहीं रह गया, मन की बात करने का अड्डा बन गया है। जहां कई बड़े फैसले, महत्वपूर्ण विधेयक बिना किसी चर्चा के केवल बहुमत के दम पर पारित कर लिए गए। पुरानी संसद में, आजादी के बाद जब देश निर्माण के साथ–साथ संविधान निर्माण का काम हो रहा था तो एक–एक धारा, अनुच्छेद, बिंदु पर गंभीर विमर्श होते थे, भारत के विविधताओं से भरे संसार को सहेजने की कोशिश होती थी ताकि हर किसी का आत्मगौरव और सम्मान कायम रहे, भले ही वह अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक। पिछले दस बरसों में इसी संविधान को धता बताने का काम शुरु हो गया। आम भारतीय की भावनाओं, अधिकारों और हितों से मानो सरकार का कोई लेना–देना ही नहीं रहा। जिस फैसले से सत्ता मजबूत हो, उद्योगपति मित्रों का हित साधन हो, बस वही फैसले लिए जाते रहे।

इस नकारात्मकता से भरे माहौल में वह भारत बेहद तेजी से खत्म होता जा रहा था, जिसके बारे में अल्लामा इकबाल ने कहा था कि कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर–ए–जमां हमारा।

इस माहौल के बारे में राहुल गांधी ने अपनी पहली भारत जोड़ो यात्रा में देश को सचेत किया। नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान, जैसी बात महज नारा नहीं था, अपने आप में पूरा दर्शन था, जिसमें भारत की हस्ती को न मिटने देने का संकल्प था। इस संकल्प में देश की जनता ने राहुल गांधी का साथ दिया, उसके साथ–साथ विपक्ष के कई दलों ने अपना समर्थन दिया। नतीजा यह रहा कि इंडिया गठबंधन एक मजबूत विकल्प के तौर पर सियासी मंच पर उभर गया। जो लोग मोदी नहीं तो कौन जैसा बेमानी सवाल उठाते रहे, उन्हें सटीक जवाब मिल गया कि हर बार मोदी ही हों, यह बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पर ऐसा कोई भी शख्स बैठ सकता है, जिसके दल या गठबंधन ने बहुमत हासिल किया हो और फिर उसके दल या गठबंधन के लोगों ने उसे प्रधानमंत्री पद पर बिठाया हो। नरेन्द्र मोदी और उनके पहले के सारे प्रधानमंत्री इसी तरह इस कुर्सी पर बैठे, लेकिन न जाने किस मकसद से भाजपा ने यह सवाल उठाना शुरु कर दिया कि मोदी नहीं तो कौन। बहरहाल, अब भाजपा को जवाब तो मिल ही गया है, और भाजपा के अलावा दूसरे दलों के भी उन तमाम अहंकारी नेताओं को जवाब मिल गया है, जिन्होंने खुद को जनतंत्र से ऊपर समझने की गलती की। अपनी कमजोरियों को सहजता से स्वीकार नहीं किया और न ही सही सलाह देने वालों को सुनने की समझदारी दिखाई। इंडिया गठबंधन में भी कई नेता ऐसे ही अतिआत्मविश्वास और घमंड का शिकार रहे। जिसका नुकसान विपक्ष को उठाना पड़ा। अब जबकि देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण 18वीं लोकसभा का चुनाव खत्म हो गया है, नतीजे आ गए हैं, गलतियां पता चल गई हैं और जनता की ताकत भी सामने आ गई है, उम्मीद है अहंकारी नेता आत्ममंथन करेंगे और समझेंगे कि लोकतंत्र में डंका जनता का ही बजता है।

लोकसभा चुनावों में एनडीए जीता लेकिन नरेंद्र मोदी नेतृत्व हारा

इंडिया ब्लॉक 2024 के चुनावों में सत्ता के दरवाजे के काफी करीब था। 2024 एक और 2004 हो सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। यह एक वास्तविकता है। इंडिया ब्लॉक के नेताओं को स्थिति का ईमानदारी से आकलन करने और रणनीति बनाने के लिए अभी मिलना चाहिए। अब उनका मुख्य काम ब्लॉक सदस्यों की एकता को मजबूत करना है ताकि भाजपा का मुकाबला किया जा सके। 2024 के लोकसभा चुनावों में लोकतंत्र सबसे बड़ा विजेता है, क्योंकि 4 जून को घोषित परिणाम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के राजनीतिक विचारों में विविधता को रेखांकित करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा के एकमात्र चेहरे जिनके नाम पर चुनाव लड़ा गया, को इस साल 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में हुए 18वें लोकसभा चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले 64.2 करोड़ मतदाताओं से सबसे बड़ी हार मिली है।

प्रधानमंत्री ने पिछले दो महीनों में एनडीए के लिए अपनी पार्टी के नारे 'अबकी बार 400 पार' के समर्थन में लगातार प्रचार किया, जिसमें से भाजपा का लक्ष्य 370 था। पूरे देश में यह प्रचार किया गया कि भाजपा 4 जून के नतीजों के जरिये इसे हासिल कर लेगी। अंतिम स्थिति यह है –एनडीए को 292 तथा भाजपा को 240सीटें मिली हैं जो 2019 के लोकसभा स्तर से 63 सीटें कम हैं। यह 2014 की 282सीटों से भी 42 सीटें कम है। इसके मुकाबले इंडिया ब्लॉक 233 सीटों के साथ एनडीए से केवल 59 सीटें पीछे है।

प्रधानमंत्री ने देश को सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकृत करने की कोशिश की थी। उन्होंने केंद्र और राज्यों में एक ही पार्टी को रखने के नारे के साथ कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों पर भी तीखे हमले किये। चुनाव परिणामों में क्षेत्रीय दलों के पुनरुत्थान ने इस बात की गारंटी दी है कि संघवाद को खत्म करके सभी शक्तियों को केंद्रीकृत करने का भाजपा का उद्देश्य सफल नहीं होगा।

आने वाले दिन नयी सरकार के लिए मुश्किल भरे होंगे, जिसका नेतृत्व अल्पमत वाली भाजपा की सरकार करेगी। परन्तु 2024 के लोकसभा नतीजों से क्या निष्कर्ष निकलेंगे? सबसे पहले तो नरेंद्र मोदी का कद कम हुआ है। वह खुद को विश्वगुरु और एक तरह के मसीहा के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे थे, जो यह दर्शाता था कि वह भी अजेय हैं। उन्हें भगवान ने 2047 तक अपना काम करने के लिए भेजा है। वह अपने समर्थकों और आम लोगों के बीच मिथक फैलाने के लिए चुनावों में भाजपा के भारी बहुमत पर निर्भर थे। यह पूरी तरह से गलत साबित हुआ है। नरेंद्र मोदी अब एक सामान्य राजनेता बन गये हैं, जो सरकार बनाने में अपने एनडीए सहयोगियों के भारी दबाव में होंगे।

भाजपा के आगे के हिंदुत्व के कार्यक्रम को झटका लगा है। भाजपा की सीटों में गिरावट और लोकसभा में अल्पमत में आने से संघ परिवार में उथल–पुथल मचेगी। प्रधानमंत्री और पार्टी में उनके करीबी सहयोगियों ने हाल के महीनों में चुनाव रणनीति के संबंध में एकतरफा कार्रवाई की, जिससे आरएसएस और संघ परिवार की अन्य इकाइयां नाराज हैं। प्रधानमंत्री को इन हिंदुत्ववादी ताकतों के गुस्से का सामना करना पड़ेगा, जो नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में अपने एजेंडे को पूरा करने का इंतजार कर रहे थे। मोदी उनकी नजर में विफल हो गये हैं।

दूसरी बात यह है कि हिंदी भाषी राज्यों में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। जहां तक उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा का सवाल है, भगवा खेमे के लिए यह विनाशकारी था।

पार्टी ने मध्य प्रदेश में पूर्ण बहुमत बरकरार रखा है, लेकिन ऐसा राज्य में कांग्रेस के कमजोर नेतृत्व और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने के पैंतरे के बाद हुआ है। मध्य प्रदेश में पूरा संगठन गड़बड़ा गया। कांग्रेस के सक्षम नेतृत्व में पार्टी राज्य में बेहतर प्रदर्शन कर सकती थी।

हिंदी भाषी राज्य भाजपा की मुख्य ताकत हैं और इसे पार्टी की मुख्य ताकत माना जाता है, क्योंकि यह क्षेत्र उसके हिंदुत्व के आधार से जुड़ा है। अग्रणी राज्य उत्तर प्रदेश में पार्टी के पतन से निश्चित रूप से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित भाजपा के शीर्ष नेताओं के बीच पुनर्विचार की स्थिति पैदा होगी। योगी का भविष्य दांव पर है, क्योंकि वे उत्तर प्रदेश में अभियान चलाने वाले भाजपा के मुख्य नेता थे।

अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में बड़ा उलटफेर किया है और खास बात यह है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस–सपा गठबंधन कामयाब रहा है। आने वाले दिनों में इसे और आगे बढ़ाना होगा, क्योंकि राज्य में 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं।

तीसरी बात यह है कि राहुल गांधी एक मजबूत नेता के रूप में उभरे हैं, जिन्हें लोगों से अधिक स्वीकार्यता मिल रही है। राहुल ने कांग्रेस के अभियान की कमान बहुत अच्छे से संभाली है। वे हिंदुत्व, बेरोजगारी, महंगाई समेत मुख्य मुद्दों पर प्रधानमंत्री और भाजपा पर लगातार हमला करते रहे हैं। दरअसल, राहुल ने एक ऐसे नेता की परिपक्वता दिखाई है, जो गठबंधन सहयोगियों से निपट सकता है। कांग्रेस ने 2024 के चुनावों में अपनी लोकसभा सीटों को लगभग दोगुना कर लिया है, लेकिन 18वीं लोकसभा चुनाव के नतीजों से मिले सबक के आधार पर आगे की कार्रवाई आने वाले दिनों में पार्टी को अच्छा लाभ दे सकती है। खामियां जगजाहिर हैं, कांग्रेस नेतृत्व द्वारा सुधारात्मक कार्रवाई के लिए उनका ध्यान रखा जा सकता है। देश की 139 साल पुरानी पार्टी कांग्रेस खुद को इंडिया ब्लॉक के प्रभावी संचालक के रूप में काम करने के लिए तैयार कर सकती है।

इंडिया ब्लॉक ने कई राज्यों में अच्छा प्रदर्शन किया है। यह घटक दलों के जमीनी कार्यकर्ताओं की समन्वित कार्रवाई से संभव हुआ है। इसके जरिए कई युवा नेता उभरकर सामने आये हैं। राहुल गांधी के अलावा अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, आदित्य ठाकरे, उदयनिधि स्टालिन, कल्पना सोरेन और अभिषेक बनर्जी ऐसे युवा नेता हैं, जिनके आने वाले दिनों में इंडिया ब्लॉक की अगुआई करने की उम्मीद है। उद्धव ठाकरे और एम के स्टालिन दोनों ने दिखाया है कि कैसे संयुक्त नेतृत्व भाजपा और एनडीए को बड़ा झटका दे सकता है। आने वाले दिनों में अशांत राजनीतिक स्थिति से निपटने के लिए इंडिया ब्लॉक को सभी स्तरों पर मजबूत करना होगा।

गोरखपुर से रवि किशन की चौतरफा जीत

बांसगांव से इन दो बूथों ने पार लगाई कमलेश की नैया

गोरखपुर। भाजपा उम्मीदवार रवि किशन गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र तो जीते ही, सभी विधानसभाओं में भी विजय पताका फहराने में कामयाब रहे हैं। आइएनडीआइ गठबंधन से सपा प्रत्याशी काजल निषाद से उनकी जीत के अंतर एक लाख तीन हजार 432 में सबसे बड़ी भागीदारी शहर विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं ने निभाई। उन्होंने सर्वाधिक 47,614 मतों से इसी विधानसभा में जीत दर्ज की। ठीक इसके उलट बांसगांव लोकसभा क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार कमलेश पासवान को तीन विधानसभाओं के मतदाताओं ने नकार दिया। सिर्फ दो विधानसभाओं चौरीचौरा और रुद्रपुर के मतदाता उनकी जीत की नैया के खेवनहार साबित हुए।

आइएनडीआइ गठबंधन से कांग्रेस उम्मीदवार सदल प्रसाद से कमलेश पासवान के जीत का अंतर सबसे अधिक चौरीचौरा में 16,273 और रुद्रपुर में 14,636 है। लेकिन, कमलेश अपना गढ़ बांसगांव नहीं बचा पाए। यहां उन्हें हार का सामना करना पड़ा। यहां सदल ने उन्हें 9243 मतों से शिकस्त दी।

आइएनडीआइ गठबंधन से कांग्रेस उम्मीदवार सदल प्रसाद से कमलेश पासवान के जीत का अंतर सबसे अधिक चौरीचौरा में 16273 और रुद्रपुर में 14636 है। लेकिन कमलेश अपना गढ़ बांसगांव नहीं बचा पाए। यहां उन्हें हार का सामना करना पड़ा। यहां सदल ने उन्हें 9243 मतों से शिकस्त दी।बांसगांव से ही सटी हुई चिल्लूपार विधानसभा में कमलेश, सदल से 10376 मत तो बरहज विधानसभा में 7632 मत से पिछड़ गए।

बांसगांव से ही सटी हुई चिल्लूपार विधानसभा में कमलेश, सदल से 10376 मत तो बरहज विधानसभा में 7632 मत से पिछड़ गए। गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र की एकमात्र विधानसभा, ग्रामीण में समाजवादी पार्टी की काजल निषाद ने रवि किशन को कड़ी टक्कर दी। यहां से रवि किशन सिर्फ 3092 वोट की ही बढ़त बना सके। रवि किशन को एक लाख 13 हजार 300 वोट मिले तो काजल को एक लाख 10 हजार 208 मत मिले। माना जा रहा है कि काजल को यहां मुस्लिमों और निषादों का अच्छा वोट मिला जिसके बूते वह यहां रवि किशन को कड़ी टक्कर देने में कामयाब रहीं। सहजनवां विधानसभा में भी काजल से रवि किशन की जीत का अंतर 5,309 ही रहा। कैंपियरगंज में रवि किशन, काजल से 18, 926 और पिपराइच में 28,783 वोट से आगे रहे। कर्मचारियों का भरोसा जीतने में दोनों ही लोकसभा के भाजपा उम्मीदवार सफल नहीं रहे। गोरखपुर लोकसभा में पोस्टल और ई वोट के जरिये कुल 3,029 मतदान कार्मिकों व दूसरे जिलों, प्रदेश व देश से बाहर तैनात कर्मचारियों ने मतदान किया। इनमें रवि किशन को 1322 मत मिले हैं, जबकि काजल को सर्वाधिक 1520 वोट मिले। इसी तरह बांसगांव में कुल पड़े 4072 वोटों में से भाजपा के कमलेश पासवान को 1165 और सदल को सर्वाधिक 1671 मिले।

भाजपा सांसद कमलेश पासवान ने चुनाव जीत कर बनाया ऐसा रिकार्ड

2009 के चुनाव में बांसगांव से भाजपा के टिकट पर मैदान में उतरे कमलेश पासवान ने बसपा के श्रीनाथ को 52787 मतों से हराया। 2014 के चुनाव में जीत के अंतर का रिकार्ड बना दिया। उन्होंने बसपा के सदल प्रसाद को 189516 मतों के भारी अंतर से शिकस्त दी थी। इससे पहले 1984 में कांग्रेस के महावीर प्रसाद ने इंडियन कांग्रेस (आइ) के रामसूरत को 17429 मतों से हराया था।

सबसे ज्यादा और सबसे कम अंतर से जीतने का बनाया रिकार्ड वर्ष 1967 में 8606 मत से जीते से ससपा के मोलहू प्रसाद

गोरखपुर। भाजपा के सांसद कमलेश पासवान बांसगांव लोकसभा क्षेत्र में अपना एक रिकार्ड याद नहीं रखना चाहेंगे। वर्ष 2014 में सांसद कमलेश पासवान ने अब तक के सर्वाधिक मतों के अंतर से जीतने का रिकार्ड बनाया था। इस बार कमलेश ने सबसे कम मतों के अंतर से जीतने का भी रिकार्ड बनाया है। कमलेश एक रिकार्ड तो याद रखना चाहेंगे, लेकिन दूसरे को भूलना। वर्ष 2009 के चुनाव में बांसगांव लोकसभा सीट से भाजपा के टिकट पर मैदान में उतरे कमलेश पासवान ने बसपा के श्रीनाथ को 52 हजार 787 मतों से हराया था। वर्ष 2014 के चुनाव में कमलेश ने जीत के अंतर का रिकार्ड बना दिया।

उन्होंने बसपा के सदल प्रसाद को एक लाख 89 हजार 516 मतों के भारी अंतर से शिकस्त दी थी। इससे पहले वर्ष 1984 में कांग्रेस के महावीर प्रसाद ने इंडियन कांग्रेस (आइ) के रामसूरत को एक लाख 74 हजार 229 मतों से हराया था। महावीर प्रसाद को दो लाख 32 हजार 747 मत मिले थे। रामसूरत को मात्र 58 हजार 518 मत मिले थे। सबसे कम मतों के अंतर से जीत की बात करें तो वर्ष 1967 में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के मोलहू प्रसाद का नाम आता है। उन्होंने कांग्रेस के एम प्रसाद को 8606 मतों से हराया था। मोलहू प्रसाद को 89 हजार 770 तो एम प्रसाद को 81 हजार 164 मत मिले थे।

गोरखपुर में अब गति पकड़ेंगे 4000 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट

जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन के मुताबिक चंपा देवी पार्क में प्रस्तावित कन्वेंशन सेंटर और राप्तीनगर टाउनशिप परियोजना के टेंडर की प्रक्रिया चुनाव पहले ही पूरी हो गई थी। अब जल्द ही निर्माण भी शुरू होगा। 6000 एकड़ में बसाए जाने वाली नया गोरखपुर परियोजना को भी अब गति मिलेगी। 15 करोड़ से राप्ती रिवर फ्रंट विकसित करने के कार्य का टेंडर भी निकाला जा सकेगा जिसके निर्माण की राह खुलेगी।

गोरखपुर। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जारी हुई अधिसूचना के गुरुवार को समाप्त हो जाने के बाद करीब ढाई महीने से लटकी सड़क, पुल, आवासीय परियोजनाओं समेत चार हजार करोड़ से अधिक के विकास कार्यों को अब गति मिलेगी। इनमें से कई ऐसी परियोजनाएं हैं जिनका शिलान्यास हो गया था, लेकिन टेंडर प्रक्रिया फाइनल नहीं हो पाने की वजह से काम नहीं शुरु हो सका था। 16 मार्च को जारी हुई आदर्श आचार संहिता में सर्वाधिक लोक निर्माण विभाग, सेतु निगम, गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) और नगर निगम की परियोजनाएं प्रभावित हुई थीं। अब इन सभी का निर्माण शुरू हो सकेगा।

गोरखपुर–बस्ती मंडल में वोट व प्रतिशत दोनों में पीछे छूटी भाजपा

छह सीटों पर जीत के बाद भी भाजपा को हुआ चौतरफा नुकसान हार कर भी हर सीट में फायदे में दिख रहा विपक्ष, आंकड़े हैं गवाह

लोकसभा क्षेत्र	2019 में पड़े वोट	भाजपा	सपा/बसपा	कांग्रेस
डुमरियागंज	9,85,269	4,92,253 (49.49%)	3,86,932 (49.96%)	60,549
बस्ती	10,54,539	4,71,162 (44.65%)	4,40,808 (41.77%)	86,920
संतकबीर नगर	10,63,390	4,67,543 (43.95%)	4,31,794 (40.59%)	1,28,506
गोरखपुर	11,84,635	7,17,122 (60.52%)	4,15,458 (35.06%)	22,972
महराजगंज	12,23,763	7,26,345 (59.19%)	3,85,927 (31.45%)	72,516
कुशीनगर	10,53,117	5,97,039 (56.68%)	2,59,479 (24.63%)	1,46,151
देवरिया	10,15,363	5,80,664 (57.17%)	3,30,713 (32.56%)	51,056
बांसगांव	9,69,136	5,46,673 (56.0%)	3,93,205 (40.56%)	----
सलेमपुर	9,22,518	4,67,940 (50.65%)	3,55,325 (39.27%)	27,363

लोकसभा क्षेत्र	2024 में पड़े वोट	भाजपा	सपा/कांग्रेस	बसपा
डुमरियागंज	10,18,956	4,63,303 (45.46%)	4,20,575 (41.27%)	35,936
बस्ती	10,78,191	4,26,011 (39.51%)	5,27,005 (48.87%)	1,03,301
संतकबीर नगर	10,90,698	4,06,525 (37.27%)	4,98,695 (45.72%)	1,50,812
गोरखपुर	11,46,960	5,85,834 (50.75%)	4,82,308 (41.78%)	55,781
महराजगंज	12,04,033	5,91,310 (49.11%)	5,55,859 (46.16%)	32,955
कुशीनगर	10,70,190	5,16,345 (48.24%)	4,34,555 (40.60%)	67,208
देवरिया	10,30,414	5,04,541 (48.96%)	4,69,699 (45.58%)	45,564
बांसगांव	9,45,359	4,28,693 (45.38%)	4,25,543 (45.04%)	64,750
सलेमपुर	9,10,703	4,01,899 (44.13%)	4,05,472 (44.52%)	80,599

गोरखपुर। गोरखपुर–बस्ती मंडल में पड़े वोटों के नजरिये से अगर भाजपा और इंडिया गठबंधन के प्रदर्शन का मूल्यांकन करें तो छह सीटों पर जीत के बाद भी भाजपा के लिए यह चुनाव हर तरह से नुकसानदेह साबित हुआ है। तीन सीटों पर तो विपक्ष को जीत मिली, बाकी की छह सीटों पर हार के बाद भी वोट और प्रतिशत का ग्राफ बढ़ा।

इस बार के चुनाव में भाजपा व इंडिया गंठबंधन को मिले वोट और कुल वोटों के मुकाबले उनके प्रतिशत इस नुकसान और फायदे के गवाह हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में मिले मतों के आंकड़ों से अगर इस बार के मतों के आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो भाजपा को जहां छह से 11 प्रतिशत वोटों को नुकसान हुआ है, वही इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी हर संसदीय क्षेत्र में पांच से 15 प्रतिशत तक का फायदे में हैं। भाजपा को सर्वाधिक वोट प्रतिशत का सर्वाधिक नुकसान देवरिया में हुआ है। वहां वोट तो पिछली बार की तुलना में अधिक पड़ा लेकिन मतदान प्रतिशत का नुकसान 11 प्रतिशत रहा है। विपक्षी दल का प्रत्याशी इस मामले में 13 प्रतिशत आगे रहा। इस मामले में महराजगंज दूसरे स्थान पर रहा है। वहां भाजपा को 10 प्रतिशत कम वोट मिले है जबकि विपक्ष के प्रत्याशी को 15 प्रतिशत मतों का फायदा हुआ है। पिछली बार तीन लाख से अधिक मतों से जीतने वाले भाजपा के प्रत्याशी रवि किशन भी वोट प्रतिशत के मामले में करीब 10 प्रतिशत के नुकसान में हैं जबकि विपक्षी छह प्रतिशत के फायदे में।

इस दृष्टि से बांसगांव संसदीय सीट भी बड़े उलटफेर वाली रही है। वहां भाजपा को पिछले चुनाव के मुकाबले 11 प्रतिशत का नुकसान हुआ है जबकि विपक्ष करीब पांच प्रतिशत के फायदे में है। सलेमपुर संसदीय सीट पर भाजपा प्रत्याशी छह प्रतिशत वोट के नुकसान में हैं जबकि विपक्ष करीब इतने प्रतिशत के फायदे में। डुमरियागंज सीट पर भी भाजपा इस बार चार प्रतिशत वोट नुकसान हुआ है जबकि विपक्ष इसका दोगुणा यानी करीब आठ प्रतिशत का फायदा हुआ है। वहां जबकि इस बार पिछले चुनाव के मुकाबले अधिक वोट पड़े हैं। बस्ती संसदीय क्षेत्र में भी इस बार बीते चुनाव से ज्यादा मत पड़े लेकिन भाजपा प्रत्याशी का मत पांच प्रतिशत घट गया। वहीं विपक्षी सपा प्रत्याशी का वोट सात प्रतिशत बढ़ गया। बस्ती से सटे संतकबीर नगर में भाजपा प्रत्याशी को करीब सात प्रतिशत कम वोट मिले जबकि विपक्षी दल सपा के प्रत्याशी को पांच प्रतिशत का फायदा हुआ। निश्चित रूप से इन आंकड़ों ने भाजपा की चिंता बढ़ाई है और विपक्ष के मनोबल को मजबूत करने का काम किया है।

भाजपा को सर्वाधिक वोट प्रतिशत का सर्वाधिक नुकसान देवरिया में हुआ है। वहां वोट तो पिछली बार की तुलना में अधिक पड़ा लेकिन मतदान प्रतिशत का नुकसान 11 प्रतिशत रहा है। विपक्षी दल का प्रत्याशी इस मामले में 13 प्रतिशत आगे रहा। इस मामले में महराजगंज दूसरे स्थान पर रहा है।वहां भाजपा को 10 प्रतिशत कम वोट मिले है जबकि विपक्ष के प्रत्याशी को 15 प्रतिशत मतों का फायदा हुआ।

सपा ने दर्ज की जीत तो मुस्लिम इलाकों में छाई खुशी की लहर

यूपी की इस हाई प्रोफाइल सीट पर बिगड़े भाजपा के समीकरण

सपा की जीत से समर्थकों और मुस्लिम इलाकों में छाई खुशी की लहर
प्रत्याशी नरेश उत्तम के जीत के आंकड़े बढ़ने से बढ़ता गया उत्साह
कांग्रेस और सपा के गठबंधन के चलते अल्पसंख्यकों का रहा झुकाव

संवाददाता, फतेहपुर। लोकसभा चुनाव में भाजपा के चुनावी एजेंडे का कोई असर नहीं दिखा है। वहीं खासकर सपा और कांग्रेस गठबंधन ने योजनाओं की काट करते हुए बेरोजगारी, महंगाई, सत्ता का घमंड जैसे बिंदुओं को खूब ताना। संविधान में बदलाव जैसे मुद्दों को उछाला तो मुस्लिम वर्ग को अपनी ओर झुकाने में सफल रहे।

बसपा का परंपरागत वोट में सेंधमारी करते हुए एससी–एसटी वोटों को अपनी झोली में डाला। मौके की नजाकत को देखते हुए और सत्तासीन भाजपा प्रत्याशी को धूल चटाने के लिए मुस्लिमों ने एकमुश्त वोट गठबंधन प्रत्याशी के पक्ष में किया। मतदान के 18 चक्र से लेकर अंतिम चरण में भाजपा प्रत्याशी को लगातार पीछे करते हुए सपा प्रत्याशी ने बढ़त बनाई तो मुस्लिम वर्ग में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।शहर के लाला बाजार, मसवानी, आबूनगर, चौक, पनी, पीरनपुर, तुराब अली का पुरवा तो गांवों में गाजीपुर, बहुआ, खागा, जहानाबाद, बिंदकी आदि मुस्लिम इलाकों में लोग टीवी पर नजर टिकाए रहे। समर्थक प्रत्याशी की जीत की चर्चा चाय और पान की दुकानों में खूब देखने को मिली। झुंड के झुंड निकल कर जीत पर गुणा–भाग लगाते हुए अपनी बात सिद्ध करते हुए नजर आए।

इंटरनेट मीडिया पर भी दिखा जीत का जश्न

कांग्रेस और सपा से वास्ता रखने वाले स्थानीय नेताओं ने सपा प्रत्याशी नरेश उत्तम पटेल की जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए जनता को बधाई दी। फोटो युक्त मैसेज में तरह तरह की अभिव्यक्ति रखते हुए प्रत्याशी के साथ निकटता झलकाई। वहीं तमाम लोगों ने कांग्रेस और सपा के गठबंधन को ताकत बताते हुए राहुल और अखिलेश को सोच को सराहा। सपा प्रत्याशी की जीत को जनता की जीत करार देते हुए सत्तासीन भाजपा का घमंड चूर करने वाला करार दिया।

लोकसभा चुनाव में भाजपा के चुनावी एजेंडे का कोई असर नहीं दिखा है। वहीं खासकर सपा और कांग्रेस गठबंधन ने योजनाओं की काट करते हुए बेरोजगारी महंगाई सत्ता का घमंड जैसे बिंदुओं को खूब ताना। संविधान में बदलाव जैसे मुद्दों को उछाला तो मुस्लिम वर्ग को अपनी ओर झुकाने में सफल रहे। बसपा का परंपरागत वोट में सेंधमारी करते हुए एससी–एसटी वोटों को अपनी झोली में डाला।

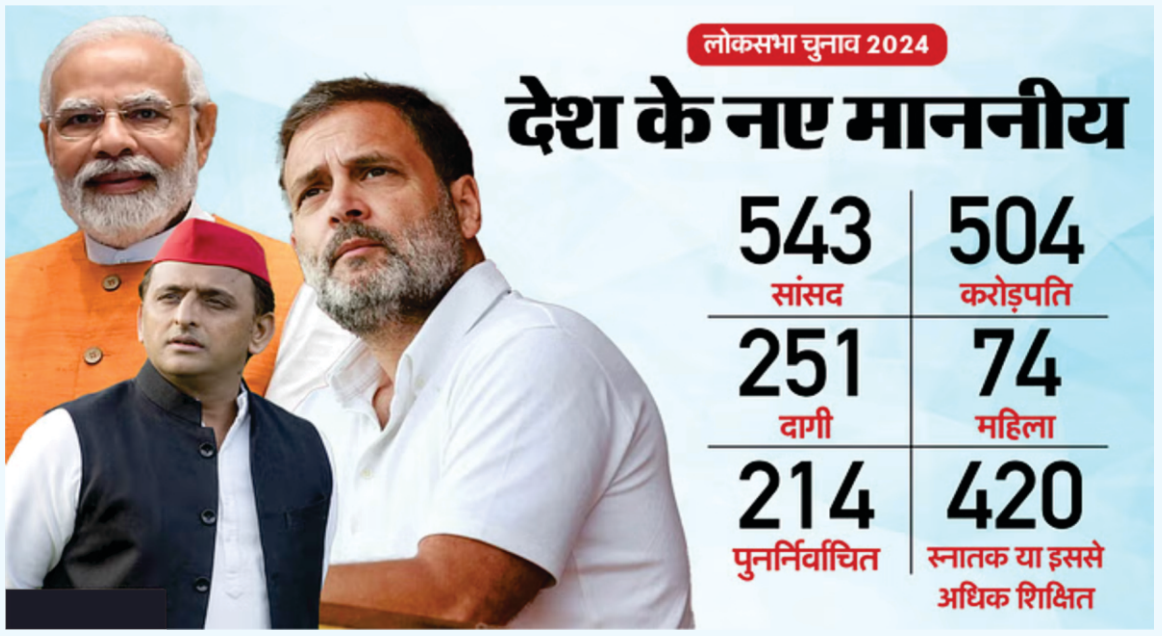

251 दागी, 504 करोड़पति, 74 महिलाएं

तीन सबसे अमीर नवनिर्वाचित सांसदों में नवीन लजदल भी

लखनऊ,संवाददाता एडीआर ने 2024 लोकसभा चुनाव में जीते सभी 543 उम्मीदवारों के हलफनामों पर रिपोर्ट जारी की है। इसके विश्लेषण के अनुसार, 543 विजेता उम्मीदवारों में से 251 के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इस चुनाव में केवल 74 यानी 14 महिलाएं जीती हैं।

लोकसभा चुनाव 2024 का जनादेश सुनाया जा चुका है। 18वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव के नतीजे मंगलवार को घोषित कर दिए गए। इस चुनाव में केंद्र की सत्ताधारी भाजपा को 240 सीटें मिली हैं। वहीं दूसरे स्थान पर कांग्रेस है जिसके 99 सांसद लोकसभा पहुंचेगे। 293 सीटों के साथ एनडीए लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रहा है। नई लोकसभा के गठन की तैयारियों के बीच, एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने 2024 में चुनाव जीतने वाले सभी 543 विजेता उम्मीदवारों के हलफनामों का विश्लेषण किया है।

विजेता उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि

एडीआर द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार, मौजूदा लोकसभा चुनावों में 543 विजेता उम्मीदवारों में से 251 के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इन विजेता उम्मीदवारों में से 170 पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें हत्या, हत्या का प्रयास, महिलाओं के खिलाफ अपराध और नफरती भाषण से जुड़े आरोप शामिल हैं।

543 में से 251 (46) विजेता उम्मीदवारों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। 170 (14) विजेता उम्मीदवारों ने अपने ऊपर गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। 27 विजेता उम्मीदवारों ने अपने ऊपर दोषसिद्ध मामले घोषित किए हैं। चार विजेता उम्मीदवारों ने अपने ऊपर हत्या (आईपीसी–302) से जबकि 27 विजेता उम्मीदवारों ने अपने खिलाफ हत्या के प्रयास (आईपीसी–307) से जुड़े मामले घोषित किए हैं। महिलाओं के ऊपर अत्याचार से जुड़े मामले घोषित करने वाले विजेता उम्मीदवार 15 हैं। इनमें से दो विजेता उम्मीदवारों के ऊपर दुष्कर्म (आईपीसी–376) से जुड़ा मामला दर्ज है।

दलवार आंकड़े क्या हैं ?

एडीआर ने चुनाव में विजेता उम्मीदवारों द्वारा घोषित आपराधिक मामले दलवार आंकड़े जारी किए हैं। भाजपा के 240 में से 94 (39), कांग्रेस के 99 में से 49 (49), सपा के 37 में से 21 (57), टीएमसी के 29 में से 13 (45), डीएमके के 22 में से 13 (59), टीडीपी के 16 में से आठ (50) और शिनसेना के सात में से पांच विजेता उम्मीदवारों ने अपने ऊपर आपराधिक मामले घोषित किये हैं।

विजेता उम्मीदवारों की संपत्ति का लेखा–जोखा

543में से 93 यानी 504 विजेता उम्मीदवार करोड़पति हैं। सबसे ज्यादा भाजपा के 227 विजेता उम्मीदवार करोड़पति हैं। दूसरे स्थान पर कांग्रेस है जिसके 92 विजेता उम्मीदवार करोड़पति हैं। चुनावी हलफनामों में इन प्रत्याशियों ने एक करोड़ से ज्यादा की संपत्ति घोषित की है। लोकसभा चुनाव 2024 के हर विजेता उम्मीदवार के पास औसतन 46.34 करोड़ रुपये की संपत्ति है। दलवार आंकड़ों पर गौर करें तो भाजपा के 240 विजेता उम्मीदवारों की औसतन संपत्ति 50.04 करोड़ की है।

सबसे अमीर विजेता प्रत्याशियों में नवीन लजदल भी

इस चुनाव में सबसे ज्यादा संपत्ति घोषित करने वाले विजेता उम्मीदवार डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी हैं। आंध्र प्रदेश के गुंटूर से टीडीपी प्रत्याशी पेम्मासानी ने कुल 5705 करोड़ की संपत्ति घोषित की है। इस मामले में दूसरे स्थान पर भाजपा के कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी हैं। तेलंगाना की चेवेल्ला सीट से चुनाव जीतने वाले रेड्डी ने अपने हलफनामे में 4568 करोड़ की दौलत बताई है। तीसरे सबसे धनी विजेता प्रत्याशी भाजपा के नवीन जिंदल हैं। हरियाणा के कुरूक्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी जिंदल ने कुल 1241 करोड़ की संपत्ति घोषित की है। इस मामले में पांचवें स्थान पर कांग्रेस के नकुल नाथ हैं। उधर तीन निर्दलीय विजेता उम्मीदवारों ने अपनी संपत्ति पांच लाख रुपये से 11 लाख रुपये के बीच बताई है। पश्चिम बंगाल की पुरुलिया सीट से भाजपा के विजेता उम्मीदवार ज्योतिर्मय सिंह महतो ने 5.95 लाख रुपये, बंगाल की ही आरामबाग (एससी) सीट से विजेता उम्मीदवार मिताली बाग ने 7.84 लाख रुपये और उत्तर प्रदेश की मछलीशहर सीट से विजेता उम्मीदवार प्रिया सरोज ने अपनी संपत्ति 11.25 लाख रुपये बताई है।

19 विजेता उम्मीदवारों की पढ़ाई 5वीं और 12वीं के बीच

तमाम विजेता उम्मीदवारों की शैक्षिक योग्यता की बात करें तो 105 (19) विजेता उम्मीदवार 5वीं और 12वीं के बीच पढ़ाई किए हुए हैं। 420 (77) विजेता उम्मीदवारों ने अपनी शैक्षिक योग्यता स्नातक और इससे ज्यादा बताई है। 17 विजेता उम्मीदवार डिप्लोमा धारक हैं। एक विजेता उम्मीदवार ने अपनी शैक्षिक योग्यता साक्षर घोषित की है। विजेता उम्मीदवारों की आयु के आंकड़े देखें तो 58 (11) विजेता उम्मीदवार 25 से 40 वर्ष के बीच के हैं। 280 (52) प्रत्याशी 41 से 60 वर्ष के बीच हैं। 204 (38) विजेता उम्मीदवारों की आयु 61 से 80 वर्ष है। एक विजेता उम्मीदवार ने अपनी आयु 80 वर्ष से अधिक घोषित की है।

इस चुनाव में 14 महिलाएं जीती

एडीआर द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, 543 विजेता उम्मीदवारों में से केवल 74 (14) महिलाएं हैं। इसके पहले 2019 में 77 विजेता उम्मीदवार महिलाएं थीं। 2014 के चुनाव में कुल 62 और 2009 में 59 विजेता उम्मीदवार महिलाएं थीं।

वेस्ट यूपी में भाजपा के लिए हार के कारण तलाशना 'अबूझ पहेली'

भाजपा के सभी पदाधिकारियों से हार की कारणों पर चर्चा हो रही है। पार्टी पदाधिकारियों ने मेहनत भी खूब की। विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के पास तक गए थे। बूथ स्तर तक सभी ने परिश्रम किया। लेकिन अभी तक जो कारण समझ में आ रहा है उसमें सबसे महत्वपूर्ण मुस्लिम मतदाताओं का गठबंधन के पक्ष में जाने के साथ ही जाति की राजनीति का उभार भी कारण रहा।

संवाददाता, मुरादाबाद। भारतीय जनता पार्टी की हार के बाद से पदाधिकारी भी भौंचक्के हैं। हार के अगले ही दिन से हार के कारणों की समीक्षा की जाने लगी है। लेकिन, पार्टी पदाधिकारी अभी तक हार के कारणों को समझ नहीं पा रहे हैं। उन्हें इसकी समीक्षा रिपोर्ट भी भेजनी है। रिपोर्ट तैयार करना भी दुविधा भरा काम है। पार्टी कार्यालय में दोपहर तक सन्नाटा पसरा रहा।

दोपहर बाद जिलाध्यक्ष व एक दो अन्य पदाधिकारी कार्यालय आए और सभी पदाधिकारियों से फिर से आंकड़े एकत्रित करने में जुट गए। सबसे बड़ी उलझन इस बात ही है कि अपने ही दावों को अपनी रिपोर्ट में किस प्रकार से काटेंगे। भाजपा संगठन के कारणों को तलाश रहा है। हालांकि, हार की जिम्मेदारी कुछ नेताओं तक सीमित नहीं रहेगी। भाजपा जिलाध्यक्ष आकाश पाल ने बताया कि हार तक ठीक है।

अब बूथ बार मिले वोटों का आंकलन किया जा जाएगा। सभी पदाधिकारियों से हार की कारणों पर चर्चा हो रही है। पार्टी पदाधिकारियों ने मेहनत भी खूब की। विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के पास तक गए थे। बूथ स्तर तक सभी ने परिश्रम किया। लेकिन, अभी तक जो कारण समझ में आ रहा है, उसमें सबसे महत्वपूर्ण मुस्लिम मतदाताओं का गठबंधन के पक्ष में जाने के साथ ही जाति की राजनीति का उभार भी कारण रहा।

भाजपा ने सभी वर्गों को जोड़ने का प्रयास किया। इसमें हम सफल नहीं हुए। जहां हमें जीत मिल सकती थी, वहां भी हम पिछड़े, जबकि विधानसभा चुनाव में बढ़ापुर और नगर विधानसभा चुनाव में हमने जीत दर्ज की थी। लोकसभा चुनाव में हमारे पक्ष में वहां कम मतदान हुआ। सपा कार्यालय पहुंची सांसद रुचि वीरा

मुरादाबाद की नवनिर्वाचित रुचि वीरा बुधवार को समाजवादी पार्टी कार्यालय पर पहुंची।

अन्य पदाधिकारी भी उनके साथ थे। वहां बैठकर आगे किए जाने वाले कार्यों को लेकर योजना तैयार की। हालांकि, अभी उन्हें हाईकमान की ओर से मिलने वाले निर्देशों के साथ ही केंद्र में गठबंधन की स्थिति का इंतजार है। जिस प्रकार से राजनीतिक हालात बन रहे हैं, उसे देखते हुए आगे कार्य किए जाएंगे। पार्टी कार्यालयों पर पसरा रहा सन्नाटा मतगणना के बाद सभी पार्टियों के कार्यालयों पर सन्नाटा पसरा रहा। हालांकि, प्रत्याशियों के कार्यालय पर भीड़ थी। भाजपा कार्यालय पर भी पदाधिकारी कार्यकर्ता नजर नहीं आए। दोपहर बाद एक दो पदाधिकारी और कार्यकर्ता कार्यालय पहुंचे। वहीं भाजपा प्रत्याशी स्व. सर्वेश सिंह के बुद्धि विहार स्थित कार्यालय पर उनके समर्थक और कार्यालय के पदाधिकारी बैठे थे। सभी टीवी पर दिल्ली के राजनीतिक घटनाक्रम को लेकर चल रही खबरों पर नजरे गढ़ाए रहे। वहीं, कांग्रेस कार्यालय भी सूना–सूना दिखाई दिया और पाकबड़ा स्थित बसपा कार्यालय पर भी बंद ही रहा।

लखनऊ। हदू धर्म में हर तीज–त्योहार का विशेष महत्व है। तिथि अनुसार पूजा–पाठ करने से जीवन में सुख–समृद्धि बनी रहती है। मान्यता है कि रोजाना पूजा करने पर सुहागिन महिलाओं को सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद मिलता है।

हिंदू धर्म में हर तीज–त्योहार का विशेष महत्व है। तिथि अनुसार पूजा–पाठ करने से जीवन में सुख–समृद्धि बनी रहती है। मान्यता है कि रोजाना पूजा करने पर सुहागिन महिलाओं को सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद मिलता है। ऐसे में वैवाहिक जीवन में खुशहाली के लिए वट सावित्री व्रत की महत्वता अधिक बढ़ जाती है। यह व्रत सुहागिन महिलाओं के लिए बेहद खास होता है। इस दिन महिलाएं निर्जला उपवास भी रखती हैं।

हर साल ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को वट सावित्री व्रत रखा जाता है। इस साल 6 जून को यह पर्व मनाया जाएगा। वट सावित्री के व्रत में वट वृक्ष की पूजा करने का विधान है, बिना इसके पूजा अधूरी मानी जाती है। इस दौरान वृक्ष के नीचे सावित्री और सत्यवान की प्रतिमा स्थापित जरूर करें। माना जाता है कि सावित्री ने अपने पति सत्यवान के जीवन के लिए यमराज की पूजा बरगद पेड़ के नीचे की थी। हालांकि, सभी वट वृक्ष की पूजा नहीं की जाती है। ऐसे में आइए जानते हैं कि वट सावित्री व्रत के दिन कौन से वृक्ष की पूजा नहीं करनी चाहिए।

कब रखा जाएगा वट सावित्री व्रत 2024 ?

6 जून 2024 को वट सावित्री का व्रत रखा जा रहा है। इस दिन पूजा मुहूर्त प्रातः 11 बजकर 52 मिनट से दोपहर 12 बजकर 48 मिनट तक रहेगा। इस समय वट वृक्ष की पूजा कर सकती हैं।

इस वट वृक्ष की भूलकर भी न करें पूजा

वट सावित्री व्रत के दिन ऐसे वट की पूजा अर्चना नहीं करनी चाहिए, जिसमें फल नहीं होता है। इसके अलावा जिस वट वृक्ष के पास बहुत गंदगी होती है, और उसकी साफ–सफाई नहीं हो सकती, ऐसे वट वृक्ष की पूजा नहीं करनी चाहिए। इस दौरान वट वृक्ष की डाल को तोड़कर उसकी पूजा बिल्कुल भी न करें। ऐसा करना अशुभ होता है।

इस वट वृक्ष की पूजा करे

वट सावित्री व्रत के दिन सुहागिनों को ऐसे वट की पूजा करनी चाहिए, जिसमें फूल और फल दोनों हो। यही नहीं यह पेड़ हरा और छायादार भी होना चाहिए। ऐसे वृक्ष की पूजा करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

लखनऊ,संवाददाता। केन्द्र सरकार में यूपी की भागीदारी घट सकती है। जातीय समीकरण के लिहाज से कई नए चेहरे को मौका मिल सकता है। मौजूदा सरकार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अपना दल (एस) की अनुप्रिया पटेल समेत यूपी से कुल 14 मंत्री हैं। यूपी के लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटें घटने का असर केन्द्र में बनने वाली एनडीए 03 की सरकार में भी दिखेगा। माना जा रहा है कि इस बार मोदी सरकार में यूपी की भागीदारी कम होगी।

सूत्रों का कहना है कि इस बार लोकसभा चुनाव में चुनाव हारने वाले केन्द्रीय मंत्रियों के स्थान पर कुछ नए चेहरे को मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है। हालांकि मंत्री बनाने में जातीय समीकरण का विशेष ख्याल रखा जाएगा। दरअसल 2019 के चुनाव में यूपी में भाजपा ने एनडीए समेत कुल 65 सीटें जीती थी, जबकि इस बार यह आंकड़ा 36 पर ही सिमट गया है। इसलिए माना जा रहा है कि इस बार सीटों की संख्या को देखते हुए ही केन्द्रीय मंत्रिमंडल में यूपी की भागीदारी दी जाएगी। हालांकि इस पर फैसला 7 को दिल्ली में प्रधानमंत्री की मौजूदगी में होने वाली भाजपा की बैठक में लिया जाएगा। इस बैठक में चुनाव के परिणामों की समीक्षा, केन्द्र सरकार के स्वरूप समेत प्रदेशों की सरकार में भागीदारी पर चर्चा की जाएगी।

मोदी समेत कुल 14 मंत्री है मौजूदा सरकार में

मौजूदा सरकार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अपना दल (एस) की अनुप्रिया पटेल समेत यूपी से कुल 14 मंत्री हैं। इनमें राजनाथ सिंह, स्मृति इरानी, महेंद्र नाथ पांडेय, वीके सिंह, साध्वी निरंजन ज्योति, संजीव बालियान, पंकज चौधरी, एसपी सिंह बघेल, भानू प्रताप वर्मा, कौशल किशोर, बीएल वर्मा और अजय मिश्र उर्प टेनी शामिल हैं। बीएल वर्मा राज्यसभा सदस्य हैं, जबकि मोदी समेत सभी 13 मंत्री इस बार भी चुनाव मैदान में उतरे थे। इनमें 7 मंत्री चुनाव हार गए हैं।

दिनेश शर्मा व जितिन की लग सकती है लाटरी

निर्वतमान मोदी सरकार में यूपी से ब्राम्हण चेहरे के तौर पर शामिल रहे महेन्द्र नाथ पांडेय और अजय मिश्र टेनी चुनाव हार गए हैं। इसलिए माना जा रहा है कि इनके स्थान पर पूर्व डिप्टी सीएम व राज्यसभा सदस्य दिनेश शर्मा प्रदेश पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद की लॉटरी लग सकती है।

इसके अलावा दलित और ओबीसी के समीकरण को साधने के लिए भी सतीश गौतम, अनूप बाल्मिकी और एसपी सिंह बघेल में कोई दो मंत्री बनाए जा सकते हैं। वहीं, ओबीसी चेहरे के तौर भोला सिंह, छत्रपाल गंगवार, पंकज चौधरी और विनोद बिंद में से किसी दो को मंत्री बनाए जाने की चर्चा है।

चुनावी बिसात में नौकरशाह चारों खाने चित चुनाव में उतरे सभी छह अफसरों की हुई हार

लखनऊ,संवाददाता। चुनावी बिसात में नौकरशाह चारों खाने चित हो गए। लोकसभा चुनाव में उतरे सभी छह अफसरों की हार हुई है। पांच तो मुख्य मुकाबले के आसपास भी नहीं दिखाए दिए। सियासत की जमीन पर जड़ें जमाने के लिए चुनावी मैदान में उतरे नौकरशाह चारों खाने चित हो गए। केवल एक को छोड़कर बाकी पांच तो मुख्य मुकाबले के भी आसपास नहीं दिखाई दिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कैबिनेट सेक्रेटरी रहे नृपेंद्र मिश्रा के बेटे साकेत मिश्रा भाजपा के टिकट पर श्रावस्ती से खड़े हुए थे लेकिन सपा के राम शिरोमणि वर्मा ने उन्हें 76,673 मतों से पराजित कर दिया। पूर्व आईपीएस अरविंद सेन भाकपा के टिकट पर फैजाबाद से उतरे लेकिन हार कर बाहर हो गए। डिप्टी एसपी रहे शुभ नरायन गौतम को बसपा ने कौशांबी से प्रत्याशी बनाया था। मुख्य मुकाबले में भी नहीं आ सके।

बसपा ने मथुरा से रिटायर्ड आईआरएस अधिकारी सुरेंद्र सिंह को प्रत्याशी घोषित किया लेकिन यहां भी मुख्य लड़ाई भाजपा और कांग्रेस के बीच रही। इंजीनियरिंग संवर्ग के रिटायर्ड अफसर सुरेश गौतम को जालौन से टिकट दिया गया। यहां भी सपा और भाजपा में मुख्य मुकाबला रहा। सपा ने रिटायर्ड एडीजे मनोज कुमार को नगीना से टिकट दिया था। आजाद समाज पार्टी और भाजपा के बीच ही जीत का संघर्ष चला, जिसमें चंद्रशेखर रावण विजयी रहे।

हालांकि नौकरशाही के माहिर अफसर राजनीति के दांव–पेच भी खूब जानते हैं। मौका पड़ने पर नेताओं की तरह पाला बदलने से नहीं चूकते। बसपा सरकार में सबसे कद्दावर अफसरों में शुमार आईएएस कुंवर फतेह बहादुर सिंह और रामबहादुर ने सेवानिवृत्ति के बाद बसपा का दामन थाम लिया था। फतेह बहादुर बाद में सपा, तो रामबहादुर भाजपा में चले गए। इसी तरह बसपा सुप्रीमो मायावती के करीबी अफसर रहे पीएल पुनिया ने कांग्रेस से राजनीति की। पूर्व आईएएस अफसर नीरा यादव के पति पूर्व आईपीएस महेंद्र सिंह यादव सपा सरकार में मंत्री बने, लेकिन बाद में भाजपा का दामन थाम लिया।

लखनऊ,संवाददाता। अयोध्या में भाजपा को हराने में सपा के अवधेश का साइलेंट मैनेजमेंट अचूक रहा। अवधेश चुनाव भर प्रदर्शन से बचते रहे। वन–टू–वन संपर्क से मतदाताओं को साधते रहे। रोड शो और रैलियों पर भाजपा का जोर था। अवधेश प्रसाद इससे परहेज करते रहे। लोकसभा चुनाव के दौरान अवधेश प्रसाद ने साइलेंट मैनेजमेंट की जो चाल चली, वह अचूक रही। चुनाव भर वह प्रदर्शन से बचते रहे। न कोई रोड–शो किया ना ही किसी तरह ही बयानबाजी की। बस चुपचाप जनसंपर्क और वन–टू–वन प्रचार में वह और उनकी टीम जुटी रही। इसी से भाजपा को उनकी किसी चाल का अंदाजा नहीं लग सका और बाजी मार ले गए। चुनाव में भाजपा शुरू से ही आक्रामक मुद्रा में थी। प्रदेश और केंद्र के कई मंत्रियों ने यहां कैंप करके माहौल बनाया। दर्जनों रैली व सभा हुईं। नामांकन के दिन उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी समेत प्रदेश सरकार के कई मंत्री जुटाए गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, सीएम योगी, डिप्टी सीएम केशव मौर्या जैसे कई दिग्गजों ने रोड शो करके माहौल बनाने की पुरजोर कोशिश की। लेकिन दूसरा खेमा चुनाव भर साइलेंट रहा। संगठन ने डिंपल यादव, प्रियंका गांधी, इकरा हसन के रोड–शो और शिवपाल यादव की जनसभा का प्लान तैयार करके प्रस्ताव भेजा।

इस पर सहमति भी बन गई, लेकिन अवधेश प्रसाद ने प्रदर्शन करने से परहेज किया और सभी कार्यक्रम निरस्त हो गए। सपा से जुड़े अन्य नेता–पदाधिकारी उन्हें बीच–बीच में टोकते भी रहे, लेकिन वह कछुए की चाल लगातार चलते रहे। लाख टिप्पणियों के बावजूद उन्होंने अपनी शैली और चुनाव लड़ने का ढंग नहीं बदला।

सुबह उठकर सहादतगंज स्थित केंद्रीय कार्यालय पर समर्थक, कार्यकर्ताओं और चुनावी चाणक्यों से रणनीतियों पर चर्चा, दोपहर बाद क्षेत्र में निकलना, यदा–कदा नुक्कड़ सभा, देररात तक एक–एक लोगों से मिलकर अपने पक्ष में लामबंद करना उनकी दिनचर्या रही। हर किसी से खुद की रिकॉर्ड जीत के दावे करते रहे। सिर्फ दो बार अखिलेश यादव की सभा कराई और साइलेंट मोड में अंदर ही अंदर मजबूत चुनाव खड़ा कर दिया। उनके इसी साइलेंट अटैक को समझने में भाजपा नाकाम रही और आखिर तक बाजी पलट गई। परिणाम आने के बाद राजनीति के जानकारों की जुबान पर यह गतिविधियां चर्चा में हैं।

बरेली,संवाददाता। देश की सबसे बड़ी पंचायत में शाहजहांपुर के तीन नेता होंगे। राज्यसभा सदस्य मिथलेश कुमार भी इसी जिले के रहने वाले हैं। भाजपा के जितिन और अरुण सागर और सपा के नीरज मौर्य संसद पहुंचे हैं। देश की सबसे बड़ी पंचायत में अब शाहजहांपुर जिले के चार नेता ताल ठोकेंगे। जिले के स्थानीय सांसद अरुण सागर के अलावा पीलीभीत से नवनिर्वाचित सांसद जितिन प्रसाद और आंवला के सांसद नीरज मौर्य भी शाहजहांपुर के ही रहने वाले हैं। इसी के साथ शाहजहांपुर इकलौता जिला बन गया है, जहां के तीन नेता एक ही चुनाव में सांसद चुने गए हैं। इनके अलावा राज्यसभा सदस्य मिथिलेश कुमार कठेरिया भी यहीं के निवासी हैं।

चुनाव 2024

अखिलेश यादव
सपा प्रमुख

खुश करने से सरकारें बन रही हैं तो खुश कोई और भी कर सकता है... लोकतंत्र में गिनती जब होती है तो आस और उम्मीद कभी खत्म नहीं होनी चाहिए, आस हमेशा बनी रहनी चाहिए, उम्मीद हमेशा रहनी चाहिए.

चुनाव 2024

केसी त्यागी
जेडीयू नेता

"अग्निवीर योजना को लेकर के बहुत विरोध हुआ था और चुनाव में भी उसका असर देखने को मिला है. इस पर दोबारा से विचार करने की ज़रूरत है. अग्निवीर योजना को नए तरीके से सोचने की आवश्यकता है".

नई पीढ़ी के दलितों को भाया चंद्रशेखर का आक्रामक रुख

लखनऊ। बिजनौर जिले की नगीना सीट से सांसद बने चंद्रशेखर ने इतिहास रच दिया है। चंद्रशेखर दलितों के 'नगीना' बने हैं। इस चुनाव में मायावती का रुतबा घट गया है। नई पीढ़ी के दलितों को चंद्रशेखर का आक्रामक रुख भा गया है। चंद्रशेखर की पार्टी के प्रत्याशी ने डुमरियागंज में भी बसपा को पछाड़ा दिया। बिजनौर जिले की नगीना सीट से सांसद बने चंद्रशेखर दलितों के नए 'नगीना' बन गए हैं। आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद उर्फ रावण की जीत के साथ ही दलित वोटों के मायावती से खिसकने के संकेत मिल रहे हैं।

बसपा सुप्रीमो की बिना गठबंधन की चुनावी सियासत तीसरी बार फेल हो गई। बीते एक दशक से विपक्षी दलों के चक्रव्यूह में फंसी बसपा अर्श से फर्श तक पहुंच चुकी है। दलित वोट बैंक में मायावती का रुतबा भी कम होता नजर आ रहा है। नतीजे बताते हैं कि मायावती को अपनी जाति के जिस वोट बैंक पर भरोसा था, वह अब चंद्रशेखर के पाले में जाता दिख रहा है। नगीना में चंद्रशेखर को 512552 वोट मिले, जबकि बसपा प्रत्याशी सुरेंद्र पाल सिंह को महज 13272 वोट ही हासिल हुए। साफ है कि जाटवों ने भी बसपा को वोट नहीं दिया। नगीना के अलावा डुमरियागंज सीट पर भी आजाद समाज पार्टी ने बसपा प्रत्याशी से अधिक वोट हासिल किए हैं, जो दलितों की भविष्य की बदलती राजनीति का संकेत दे रही है। डुमरियागंज में आजाद समाज पार्टी के प्रत्याशी अमर सिंह चौधरी को 81305 वोट मिले, जबकि बसपा प्रत्याशी मोहम्मद नदीम को महज 35936 वोट ही हासिल हुए।

हमेशा उपलब्ध रहते हैं चंद्रशेखर

चंद्रशेखर के तेवर दलित युवाओं को हमेशा आकर्षित करते हैं। खुद मायावती भी चंद्रशेखर रावण की राह में तमाम रोड़े अटकाने का प्रयास करती रही हैं। मायावती के मुकाबले उन तक आसान पहुंच दलितों में लोकिप्रय बनाती है। बसपा सुप्रीमो का कार्यकर्ताओं से दूरी बनाकर रखना, पार्टी पदाधिकारियों से अपनी सुविधानुसार मिलना और चुनावों में शिकस्त मिलने के बाद किसी पर कार्रवाई नहीं करना अब उनके समर्थकों को रास नहीं आ रहा है। यही वजह है कि बसपा के वोट बैंक में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है।

आकाश को रोकना पड़ा भारी

चंद्रशेखर के मुकाबले मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को लोकसभा चुनाव में लांच तो किया, लेकिन अनुभव की कमी ने आकाश को चुनावी परिदृश्य से गायब कर दिया। आकाश के तेवर दलित युवाओं को लुभा रहे थे, लेकिन उनको पार्टी के अहम पदों से हटाए जाने से दलितों को चंद्रशेखर में नया विकल्प नजर आने लगा। यही वजह है कि चंद्रशेखर को नगीना में आसान जीत मिली, जो उनकी पार्टी के लिए संजीवनी साबित हुई है। आकाश आनंद और मायावती की जनसभाओं का भी वोटरों पर कोई असर नहीं हुआ और पार्टी को हर जगह हार का सामना करना पड़ा। यह हालात आजाद समाज पार्टी के लिए मुफीद माने जा रहे हैं।

रालोद को संजीवनी... भाजपा को बड़ा झटका

जाटलैंड में भाजपा को झटका

फायदे में रालोद...

दस साल का सूखा खत्म, इस बार खुला खाता

लखनऊ,संवाददाता। लोकसभा चुनाव में यूपी में जाटलैंड में भाजपा को झटका लगा है। रालोद को फायदा मिला है। रालोद ने दोनों सीटें जीतकर दस साल का सूखा खत्म कर दिया। सपा से नाता तोड़कर रालोद इस चुनाव में भाजपा के साथ रहा। नौ फरवरी 2024...पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने के बाद रालोद प्रमुख जयंत चौधरी ने इंडिया गठबंधन से नाता तोड़कर एनडीए का दामन थाम लिया। प्रतिक्रिया दी...दिल जीत लिया। पलटवार आया... दल जीत लिया। इस सारी कवायद के बाद परिणाम आए तो जाटलैंड में रालोद का दस साल का सूखा खत्म हो गया। रालोद को संजीवनी मिली, पर भाजपा को बड़ा झटका लगा। पश्चिमी उप्र को जाट, मुस्लिम, दलित और ओबीसी बाहुल्य माना जाता है। यहां लोकसभा की कुल 27 सीटें हैं, जिन पर रालोद का प्रभाव रहा है । वर्ष 2019 के चुनाव में भाजपा ने इनमें से 19 सीटों पर जीत हासिल की थी।

आठ सीटों पर सपा, बसपा, रालोद महागठबंधन जीता। चार सपा और चार सीटें बसपा के खाते में आई थी, पर रालोद का खाता ही नहीं खुला।

बागपत से चौधरी जयंत हारे तो मुजफ्फरनगर से उनके पिता चौधरी अजित सिंह को हार का सामना करना पड़ा। सत्ता के खिलाफ किसानों के विरोध और तमाम मुद्दों के बावजूद रालोद चुनावी दंगल में चारों खाने चित हो गया। इससे पहले के लोकसभा चुनाव 2014 में भी रालोद का खाता नहीं खुल पाया था। रालोद ने वर्ष 2014 व 2019 के आम चुनाव में कुल 11 सीटों पर चुनाव लड़ा।

सभी सीटों पर उसे हार मिली थी। ऐसे में रालोद के सामने भी चुनौती बड़ी थी। हालांकि वर्ष 2022 विधानसभा चुनाव में रालोद ने सपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ा और आठ सीटों पर सफलता हासिल की। बाद में खतौली उपचुनाव जीतकर यह संख्या नौ हो गई।

इस चुनाव में खुला खाता

जाट मतदाता रालोद के सबसे मजबूत वोट बैंक माने जाते रहे हैं। यही कारण रहा कि भाजपा ने रालोद का साथ पकड़ा। रालोद को बिजनौर और बागपत सीटें दीं और रालोद ने दोनों सीटों पर जीत का परचम लहरा दिया। उधर, जिन सीटों पर रालोद का प्रभाव माना जा रहा था, उनमें से अधिकतर पर भाजपा चारों खाने चित हो गई।

सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, नगीना, फिरोजाबाद व मुरादाबाद आदि सीटों पर भाजपा पस्त हो गई। हालांकि बागपत सीट पर डॉ. राजकुमार सागवान और बिजनौर पर चंदन चौहान चुनाव जीत गए। दोनों ही रालोद उम्मीदवार थे।

माना जा रहा है कि भाजपा के काडर वोटर का रालोद को लाभ मिला लेकिन रालोद के वोटरों का लाभ भाजपा उम्मीदवारों को उम्मीद के मुताबिक नहीं मिल पाया। हालांकि रालोद दिग्गजों का कहना है कि उसका परिणाम शत प्रतिशत सफल रहा है।

राहुल गांधी की यूपी में धमक

पहले स्थान पर गौतमबुद्ध नगर के भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा रहे, जिन्हें 5.59 लाख से अधिक वोट मिले। सोनिया गांधी के राज्यसभा में जाने के बाद एक बार ऐसा लगा कि रायबरेली से गांधी परिवार का रिश्ता खत्म होने वाला है। नामांकनपत्र जमा करने से एक दिन पहले तक स्थिति साफ नहीं थी।
आखिरी दिन तीन मई को राहुल गांधी की घोषणा के साथ ही सोनिया गांधी ने पूरे कुनबे के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचकर नामांकन पत्र भरवाया। राहुल के नामांकन के साथ ही कांग्रेसियों में उमड़ा जोश रिकॉर्ड मतों के अंतर से राहुल को जिताने के बाद ही शांत हुआ।

गांधी परिवार के गढ़ में सोनिया ने राहुल को जिस उम्मीद के साथ मैदान में उतारा उसपर राहुल खरे भी उतरे। मां के सपने को साकार करते हुए इतिहास रच दिया। आम चुनाव में न केवल मां की विरासत को बचाया, बल्कि प्रदेश में 3.90 लाख से अधिक वोटों के अंतर से जीतकर दूसरे स्थान पर पहुंच गए। पहले स्थान पर गौतमबुद्ध नगर के भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा रहे, जिन्हें 5.59 लाख से अधिक वोट मिले। सोनिया गांधी के राज्यसभा में जाने के बाद एक बार ऐसा लगा कि रायबरेली से गांधी परिवार का रिश्ता खत्म होने वाला है। नामांकनपत्र जमा करने से एक दिन पहले तक स्थिति साफ नहीं थी। आखिरी दिन तीन मई को राहुल गांधी की घोषणा के साथ ही सोनिया गांधी ने पूरे कुनबे के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचकर नामांकन पत्र भरवाया। राहुल के नामांकन के साथ ही कांग्रेसियों में उमड़ा जोश रिकॉर्ड मतों के अंतर से राहुल को जिताने के बाद ही शांत हुआ। मां की सीट पर पहली बार उतरे राहुल को जिले के हर तबके ने मत दिया। 94 प्रतिशत बूथों पर राहुल को जिताकर जिले के लोगों ने संबंधों को पहले जैसा रखने का प्रयास किया है।

प्रियंका ने बेटी के बाद अच्छी बहन का रिश्ता भी निभाया

2004 के चुनाव के बाद हर बार सोनिया के चुनाव में कमान संभालकर रायबरेली में मां को रिकॉर्ड मतों से जिताने में अहम भूमिका निभाने वाली प्रियंका गांधी इस चुनाव में अच्छी बहन भी साबित हुईं। राहुल के नामांकन के बाद भूएमऊ गेस्टहाउस में कार्यकर्ताओं में जोश भरने के बाद प्रियंका ने प्रचार की कमान संभाली। रायबरेली के साथ वे अमेठी की विधानसभाओं में भी पहुंचकर भाई के साथ केएल शर्मा के पक्ष में माहौल बनाया। इसी का नतीजा रहा कि जिले के हर गांव से राहुल गांधी को झूमकर वोट मिले।

संजीदा शेख बोलीं– तलाक लेकर खुशनसीब महसूस कर रही हूं:एक्स हसबैंड आमिर अली ने पलटवार किया, कहा– सरेआम गंदगी धोना मेरी क्लास नहीं है

माथे पर छोटी-सी बिंदिया काला सूट

कोई क्यों ना हारे दिव्या कुमार खोसला की इस सादगी पर दिल?

दिल्ली। दिव्या कुमार खोसला की फिल्म 'सावीः ए ब्लडी हाउसवाइफ' सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है. फिल्म को फैन्स का अच्छा रिस्पॉन्स भी मिल रहा है, जिसके बाद एक्ट्रेस भी काफी खुश नजर आ रही हैं. वह इस फिल्म के प्रमोशन के लिए भी जी–जान लगा रही हैं और खुद लोगों से इसके बारे में रिस्पॉन्स भी ले रही हैं. इस बीच दिव्या का एक बेहद सिंपल लुक सामने आया, जिस पर कोई भी अपना दिल हार सकता है.

सिंपल लुक में दिव्या कुमार खोसला

एक्ट्रेस दिव्या कुमार खोसला को हाल ही में मुंबई में एक बेहद सादे अंदाज में स्पॉट किया गया. एक्ट्रेस ने काले रंग का कश्मीरी कढ़ाई वाला कुर्ता और प्लाजो पहना हुआ था. इस काले रंग के सूट में दिव्या कुमार खोसला बला की खूबसूरत लग रही थीं.

माथे पर काली बिंदिया ने चुराया दिल

दिव्या कुमार खोसला इस दौरान बेहग सादगी भरे अंदाज में नजर आईं. उन्होंने माथे पर काले रंग की छोटी सी बिंदिया लगाई हुई थी. दिव्या ने कानों में बड़े–बड़े झुमके पहने हुए थे. उन्होंने अपने बालों को खुला रखा था और लाइट मेकअप के साथ अपने लुक को पूरा किया.

सादगी में छलक रही खूबसूरती

दिव्या कुमार खोसला ने उस आउटफिट के साथ बेज कलर का स्लिंग बैग किया हुआ था, जो उन्हें क्रॉस करने कंधे पर लटकाया था. दिव्या ने पैरों में सफेद रंग के बिना हील वाले सैंडिल पहने थे. दिव्या इस सिंपल से अंदाज में भी बेहद खूबसूरत लग रही थीं.

सादगी पर फिदा हो रहे फैन्स

दिव्या कुमार खोसला इस दौरान सड़क पर एक स्ट्रीट डॉग को प्यार से सहलाती हुई भी नजर आईं. उन्होंने पैपराजी को भी मुस्कुराते हुए खूब सारे पोज दिए. दिव्या कुमार की इस सादगी पर फैन्स खूब फिदा हो रहे हैं. फैन्स उनकी इस सिंपलिसटी की भी जमकर तारीफ कर रहे हैं. बता दें कि हाल ही में दिव्या कुमार खोसला की फिल्म 'सावीः ए ब्लडी हाउसवाइफ' ने सिनेमाघरों में दस्तक दी है. इस फिल्म में दिव्या कुमार खोसला के अलावा हर्षवर्धन राणे और अनिल कपूर भी हैं. इस फिल्म में दिव्या कुमार खोसला की एक्टिंग की जमकर तारीफ हो रही है।

शुभमन गिल की बनेगी दुल्हन

हर हफ्ते की तरह इस बार भी हम टेलीविजन की हर बड़ी अपडेट लेकर आ गये हैं

बहू हमारी रजनी कांत' फेम टीवी एक्ट्रेस रिद्धिमा पंडित स्टंट बेस्ड रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 9' और 'हैवान' समेत कई अन्य शोज में दिखाई दी हैं। अपने काम के अलावा, उनकी पर्सनल लाइफ को लेकर भी काफी चर्चा है, क्योंकि अफवाहें हैं कि वह भारतीय क्रिकेटर शुभमन गिल को डेट कर रही हैं। रिद्धिमा पंडित ने शुभमन गिल के साथ अपनी शादी की अफ़वाहों पर की बात हाल ही में, रिद्धिमा ने काफी सुर्खियां बटोरीं, क्योंकि उनके दिसंबर 2024 में शुभमन के साथ शादी के बंधन में बंधने की अटकलें लगाई जा रही हैं। अफवाहों के बीच, रिद्धिमा ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर इन ख़बरों पर प्रतिक्रिया दी है। इन ख़बरों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि अगर वह शादी कर रही हैं, तो वह सामने आकर इसकी घोषणा करेंगी।

आंकड़ों पर गौर करें तो भारत का पलड़ा पाकिस्तान पर भारी है। दोनों देशों के बीच टी20 वर्ल्ड कप में अब तक कुल 7 मैच खेले गए हैं भारत ने 6 तो पाकिस्तान ने एक बार जीत दर्ज की है। टीम इंडिया साल 2021 हुए मैच में पाकिस्तान से हारी थी। इसका बदला मेलबर्न में रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया ने लिया।

2022 टी20 वर्ल्ड कप

पाकिस्तान 159/8	भारत 160/6
टॉप रन	**टॉप रन**
शान मसूद 52* (42)	विराट कोहली 82* (53)
इफ्तिखार अहमद 51 (34)	हार्दिक पांड्या 40 (37)
टॉप गेंदबाजी	**टॉप गेंदबाजी**
हार्दिक पांड्या 3/30	हारिस रऊफ 2/36
अर्शदीप सिंह 3/32	मोहम्मद नवाज 2/42

अर्धशतक लगाकर रिटायर्ड हर्ट हुए रोहित

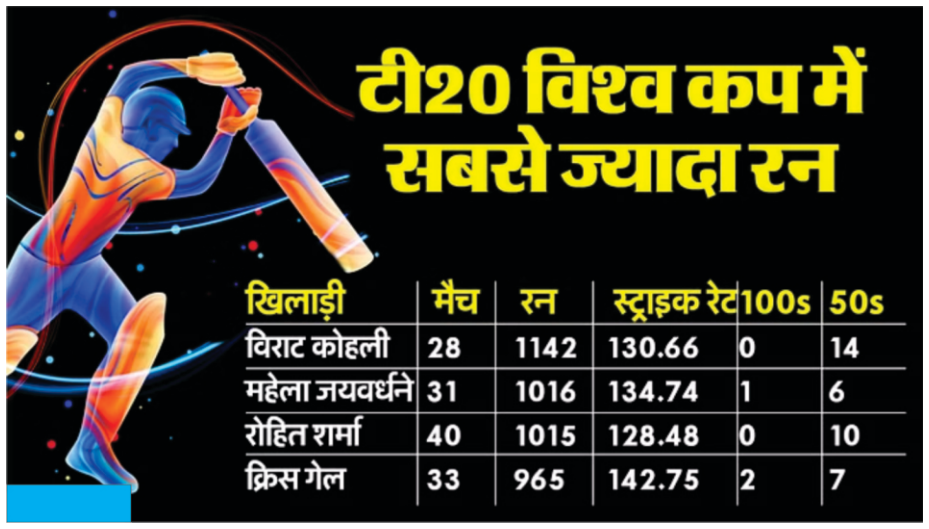

खिलाड़ी	मैच	रन	स्ट्राइक रेट	100s	50s
विराट कोहली	28	1142	130.66	0	14
महेला जयवर्धने	31	1016	134.74	1	6
रोहित शर्मा	40	1015	128.48	0	10
क्रिस गेल	33	965	142.75	2	7

स्पोर्ट्स डेस्क। टी20 विश्व कप 2024 में भारत ने आयरलैंड को हराकर टूर्नामेंट में विजयी आगाज किया है। 97 रन के लक्ष्य को भारतीय टीम ने 12.2 ओवर में हासिल कर लिया। कप्तान रोहित शर्मा ने 37 गेंद में चार चौके और तीन छक्के की मदद से 52 रन की पारी खेली। हालांकि, वह रिटायर्ड हर्ट हो गए।

मैच के बाद रोहित ने बताया कि उनके हाथ में थोड़ा सा दर्द है, जो कि उन्होंने टॉस के समय भी बताया था। इसी वजह से वह रिटायर्ड हर्ट हुए। भारत को अगला मैच पाकिस्तान जैसी मजबूत टीम से खेलना है और उस मैच में रोहित का होना बेहद जरूरी है। यही वजह है कि उन्होंने सतर्कता बरती। रोहित ने इस मैच में कई रिकॉर्ड भी अपने नाम किए।

टी20 विश्व कप में रोहित के हजार रन

मैच में 37 रन बनाते ही रोहित ने टी20 विश्व कप में हजार रन भी पूरे कर लिए। वह इस टूर्नामेंट में ऐसा करने वाले तीसरे खिलाड़ी बने। उनसे पहले विराट कोहली और श्रीलंका के महेला जयवर्धने यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। विराट के नाम इस टूर्नामेंट में 1142 रन और जयवर्धने के नाम 1016 रन हैं। रोहित एक रन से जयवर्धने को पीछे छोड़ने से चूक गए। रोहित के नाम फिलहाल टी20 विश्व कप में 37 पारियों में 128.48 के स्ट्राइक रेट से 1015 रन हैं।

रोहित के टी20 अंतरराष्ट्रीय में 4000 रन पूरे

इसके साथ ही हिटमैन ने टी20 अंतरराष्ट्रीय में 4000 रन भी पूरे कर लिए। विराट कोहली के बाद ऐसा करने वाले वह दूसरे भारतीय हैं। वहीं, विराट के बाद रोहित ही एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिनके नाम तीनों प्रारूप में 4000 से ज्यादा रन हैं। विराट ने टेस्ट में 8848 रन, वनडे में 13,848 रन और टी20 अंतरराष्ट्रीय में 4038 रन हैं। वहीं, रोहित ने टेस्ट में 4137 रन, वनडे में 10,709 रन और टी20 अंतरराष्ट्रीय में 4026 रन हैं।

रोहित ने 600 छक्के पूरे किए

रोहित ने पारी के दौरान तीन छक्के लगाए। इनमें अपने चिरपरिचित अंदाज में पुल शॉट पर छक्का भी शामिल है। रोहित ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 600 छक्के भी पूरे कर लिए। वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में यह मुकाम छूने वाले पहले खिलाड़ी भी बन गए। उनके बाद दूसरे नंबर पर क्रिस गेल हैं। गेल ने टेस्ट, वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय को मिलाकर कुल 553 छक्के लगाए थे। वहीं, शाहिद अफरीदी 476 छक्कों के साथ तीसरे स्थान पर हैं।

रोहित ने 36 गेंद में अर्धशतक पूरा किया

रोहित ने मार्क अडायर की फुलटॉस गेंद पर चौका लगा 36 गेंद में अपना 30वां टी20 अंतरराष्ट्रीय अर्धशतक भी पूरा कर लिया। 2012 से 2022 के पिछले पांच विश्वकप में विराट कोहली अर्धशतक लगाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज थे, लेकिन इस बार यह उपलब्धि रोहित शर्मा ने अर्जित की। 10वें ओवर में रोहित 37 गेंद में 52 रन बनाने के बाद रिटायर्ड हर्ट हो गए। नौवें ओवर में लिटिल की गेंद उनके हाथ पर लगी थी।

विश्व कप में भी फ्लाप हुए मैक्सवेल

पहले मैच में पहली गेंद पर आउट, शर्मनाक रिकार्ड दर्ज

स्पोर्ट्स डेस्क। गयाना में खेले गए इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 164 रन बनाए। जवाब में ओमान 20 ओवर में नौ विकेट पर 125 रन ही बना सकी। इस मैच में ग्लेन मैक्सवेल बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए। उन्हें मेहरान खान ने पहली ही गेंद पर आकिब इलियास के हाथों कैच आउट कराया। टी20 विश्व कप 2024 का आगाज हो चुका है। गुरुवार को इस टूर्नामेंट का 10वां मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और ओमान के बीच खेला गया। इस मैच में ऑस्ट्रेलियाई टीम ने भले ही 39 रनों से जीत दर्ज की लेकिन उनके लिए ग्लेन मैक्सवेल की फॉर्म चिंता का विषय बनी हुई है। आईपीएल 2024 के बाद मौजूदा टूर्नामेंट में भी उनके शून्य पर आउट होने का सिलसिला जारी है। वह पिछले कुछ वक्त से आउट ऑफ फॉर्म चल रहे हैं। गयाना में खेले गए इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 164 रन बनाए। जवाब में ओमान 20 ओवर में नौ विकेट पर 125 रन ही बना सकी। इस मैच में ग्लेन मैक्सवेल बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए। उन्हें मेहरान खान ने पहली ही गेंद पर आकिब इलियास के हाथों कैच आउट कराया।

आईपीएल के बाद विश्व कप में भी मैक्सवेल फेल

इससे पहले आईपीएल 2024 में भी मैक्सवेल कई मौकों पर गोल्डन डक का शिकार हुए थे। वह चार बार आईपीएल के 17वें सीजन में शून्य पर आउट हुए। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के लिए उन्होंने 10 मैचों में सिर्फ 52 रन बनाए। इसके अलावा छह विकेट हासिल किए। गुरुवार को ओमान के खिलाफ खेले गए विश्व कप मैच में वह शून्य पर आउट हुए। टी20 क्रिकेट में वह 33वीं बार बिना खाता खोले पवेलियन लौटे। इस लिस्ट में पहले स्थान पर सुनील नरेन का नाम दर्ज है जो 44 बार गोल्डन का शिकार हो चुके हैं।

आस्ट्रेलिया की पारी

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया को पहला झटका 19 रन के स्कोर पर लगा। ट्रेविस हेड को बिलाल खान ने आउट किया। वह सिर्फ 12 रन बना सके। इसके बाद मेहरान खान ने कहर बरपाया। उन्होंने नौवें ओवर में लगातार दो गेंदों पर दो बड़े विकेट चटकाए। पहले मेहरान ने कप्तान मार्श को पवेलियन भेजा। वह सिर्फ 14 रन बना सके इसके बाद गेंदबाज ने ग्लेन मैक्सवेल को आकिब के हाथों कैच कराया। वह बिना खाता खोले आउट हुए। इसके बाद मोर्चा स्टोइनिस और वॉर्नर ने संभाला। दोनों के बीच 100 से ज्यादा रनों की साझेदारी हुई जिसे कलीमुल्ला ने तोड़ा। उन्होंने सलामी बल्लेबाज वॉर्नर को आउट किया। वह 56 छह चौकों और एक छक्के की मदद से 56 रन बनाने में कामयाब हुए जबकि मार्कस स्टोइनिस 35 गेंदों में 66 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं, टिम डेविड 10 रन बनाकर आउट हो गए। ओमान के लिए मेहरान ने दो विकेट लिए जबकि बिलाल और कलीमुल्लाह को एक–एक विकेट मिला।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

रन चेज के बाद सुपरओवर में अमेरिका ने इस तरह पलटा मैच

स्पोर्ट्स डेस्क। अमेरिका की जीत इस विश्व कप का पहला उलटफेर है। सुपरओवर में अमेरिका ने जिस तरह का खेल दिखाया, उसने दुनियाभर के फैंस का दिल जीत लिया। सुपरओवर में पाकिस्तान की फील्डिंग भी खराब रही और ओवर–थ्रो या फिर वाइड से टीम ने काफी रन लुटाए। टी20 विश्व कप 2024 के 11वें मैच में अमेरिका ने पाकिस्तान को सुपरओवर में हराकर बड़ा उलटफेर किया। इस विश्व कप में अब तक 11 मैचों में ही दो सुपर ओवर खेले जा चुके हैं। इस मैच से पहले नामीबिया और ओमान का मुकाबला सुपरओवर में गया था, जिसे नामीबिया की टीम ने जीता था। हालांकि, अमेरिका की जीत इस विश्व कप का पहला उलटफेर है। सुपरओवर में अमेरिका ने जिस तरह का खेल दिखाया, उसने दुनियाभर के फैंस का दिल जीत लिया। सुपरओवर में पाकिस्तान की फील्डिंग भी खराब रही और ओवर–थ्रो या फिर वाइड से टीम ने काफी रन लुटाए। अमेरिकी टीम ने इसका फायदा उठाया और मैच जीतने में कामयाब रही।

चेज करते हुए अमेरिका की पारी के दौरान डेथ ओवर्स का रोमांच

दरअसल, टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान ने 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 159 रन बनाए थे। कप्तान बाबर आजम ने सबसे ज्यादा 44 रन बनाए थे। जवाब में अमेरिका की टीम भी 20 ओवर में तीन विकेट गंवाकर 159 रन बना सकी। कप्तान मोनांक पटेल ने सबसे ज्यादा 50 रन बनाए। एक वक्त अमेरिकी टीम रन चेज में आगे थी और लग रहा था कि टीम आसानी से जीत जाएगी। 16 ओवर में अमेरिका ने तीन विकेट पर 126 रन बना लिए थे और 24 गेंद में 34 रन की जरूरत थी।